जैन नगर तारातंबोल

एक ऐतिहासिक अध्ययन

- भूषण शाह

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

।। जैनशासन जयकारा ।।

जैन नगर तारातंबोल

एक ऐतिहासिक अध्ययन :

❁ देवलोक से दिव्य सान्निध्य ❁

प.पू. गुरुदेव जंबूविजयजी महाराजा

❁ संकलन-संपादन ❁

भूषण शाह

❁ प्रकाशक ❁

मिशन जैनत्व जागरण
जंबूवृक्ष, C/503, 504, श्री हरि अर्जुन सोसायटी,
चाणक्यपुरी ओवरब्रीज के नीचे,
घाटलोडीया, अहमदाबाद - 380061
(M) 9601529534, 9408202125

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 1

।। जैनशासन जयकारा ।।

	संपादकीय	4
1.	तारातंबोल नगर एक ऐतिहासिक दृष्टि	5
2.	तुर्की में ७०० जैन मंदिर	11
3.	सम्राट सिकन्दर के साथ गये जैन...	12
4.	शेठ बुलाखीदास खन्ना की हस्तप्रति	13
5.	शेठ पद्मचंद्रजी की हस्तप्रति	15
6.	शेठ अमरचंद्रजी की हस्तप्रति	16
7.	श्री धर्मचंद्रजी की हस्तप्रति	21
8.	गणिवर्य इश्वरविमलजी की हस्तप्रति	23
9.	जैन मुनि - आगलोड (गुजरात) की प्रति	24
10.	कालुचा राघवदास की हस्तप्रति	26
11.	तारातंबोल नगरी की प्राचीन चीट्ठी (परमाचंद्रजी की प्रति) - पू. कांतिसागरजी महाराजा (जैन सत्य प्रकाश से)	28
12.	तारातंबोल विषयक उल्लेख - श्री सागरमलजी कोठारी (जैन सत्य प्रकाश से)	31
13.	हिमालय के उस पार	32
14.	प.पू.मु. श्री शीलविजयजी का वृत्तांत	33
15.	जैनाचार्य श्री कल्याणसूरिजी और सम्राट सिकंदर	42
16.	हस्तप्रति के पन्ने	
	A. शेठ बुलाकीदास खन्ना की प्रति के	53
	B. शेठ पदमचंदजी की प्रति	53
	C. अमरचंद्रजी की प्रति	57
	D. निग्रंथ यात्रा विवरण प्रति	58
	E. अन्य हस्त प्रति	59
17.	हस्तप्रति में विवरणों का विश्लेषण	

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

© लेखक एवं प्रकाशक
* प्रतियाँ : 1000
* प्रकाशन वर्ष : वि. सं. 2077, ई. सं. 2020
* मूल्य : 100 ₹
* न्याय क्षेत्र : अहमदाबाद

प्राप्ति स्थान

‘मिशन जैनत्व जागरण’ के सभी केन्द्र

अहमदाबाद
101, शान्तम् एपार्ट.
हरिदास पार्क,
सेटेलाइट रोड,
अमहदाबाद

जयपुर (राज.)
आकाश जैन
ए/133, नित्यानंद नगर
क्वीन्स रोड, जयपुर

नाशिक (महा.)
आनंद नागशेठिया
641, महाशोबा लेन
रविवार पेठ,
नाशिक (महा.)

आग्रा (उ.प्र.)
सचिन जैन
डी-19, अलका कुंज
खावेरी फेझ-2
कमलानगर - आग्रा

भीलवाड़ा (राज.)
सुनिल जैन (बालड़)
“सुपार्श्व” जैन मंदिर के पास
जमना विहार-भीलवाड़ा

मुंबई
हिन्दी ग्रंथ कार्यालय
९, हीराबाग, सीपी टेन्क,
मुंबई - ४००००४
फोन : **98208 96128**

मुंबई
हेरत मणियार
ए/11 , ओम जोशी अपार्ट
लल्लुभाई पार्क रोड,
ऐंजललेंड स्कूल के सामने
अंधेरी (वेस्ट) मुंबई

Bangalore
Premlataji Chauhan
425, 2nd Floor,
7th B Main, 4th Block
Jaynagar, **Bangalore**

लुधियाणा
अभिषेक जैन,
शान्ति निटवेर्स
पुराना बाजार
लुधियाणा (पंजाब)

उदयपुर (राज.)
अरुण कुमार बडाला
अध्यक्ष अखिल भारतीय
श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक
युवक महासंघ उदयपुर शहर
427-बी, एमराल्ड टावर,
हाथीपोल,
उदयपुर-313001 (राज.)

* प्रस्तुत पुस्तक पू. साधु-साध्वी भदवंतों को पत्र प्राप्त होने पर भेंट स्वरूप भेजी जाएगी। * आवश्यकता न होने पर पुस्तक को प्रकाशक के पते पर वापस भेजने का कष्ट करें। * आप इसे Online भी पढ़ सकते हैं.... www.jaineliabrary.org. पर। * पुस्तक के विषय में आपके अभिप्राय अवश्य भेजें। * पोस्ट से या कुरियर से मंगवाने वाले प्रकाशक के एड्रेस से मंगावा सकते हैं।

* मुद्रक : भाग्य ग्राफिक्स (93270 57627)

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 2

समर्पण...

प्रस्तुत कृति
ज्योतिष सम्राट बृहद सौधर्म तपागच्छाधिपति
प.पू.आ.भ. श्री ऋषभचंद्रसूरिजी महाराजा को
सादर समर्पित

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

संपादकीय....

जैन शासन में गौरवशाली तीर्थो का एक अजोड इतिहास रहा है। कइ प्राचिन नगरों का वर्णन हमें मिलता हे जो पूर्व में जैनो की बडी राजधानीयाँ रही थी। एसा ही एक वर्णन है "तारातंबोल"। १२ वी शताब्दि से १७वी शताब्दि की करीब ७ हस्तप्रतों से इस नगर का वर्णन प्राप्त होता है। मेरे अनुमान से यह नगर अफघानीस्तान में होना चाहिए। वर्षो पूर्व तालीबानो ने भगवान बुद्ध की विशालकाय कइ प्रतिमाओ का नाश कीया था। इसमें से एक प्रतिमाजी मैनें नग्न अवस्था की देखी थी। तभी सवाल उठा था कि बुद्ध नग्न कैसे। दूसरी बात की प्रतिमाजी के उपर फणा थी तो उन लोगोने (बौद्धोने) स्नेक बुद्ध नाम दे दीया था। कइ प्रतिमाओ पर बैल-सिंह आदी के चिन्ह भी दीखाई देते थे। उन बातो से यह सिद्ध होता है की यह सब प्रतिमाएँ जैन प्रतिमा है व सचेलक एवं अचेलक दो प्रकार के मुनि की तरह सचेलक एवं अचेलक दोनो प्रकार की प्रतिमाएँ जैन संघ को मान्य है। हम अपनी बात पर पुनः आ जाते है। अफघानिस्तान में जो बौद्ध प्रतिमाए है वो स्थान तारातंबोल नगर का होना चाहिए। फीर भी जो आधार मिले है उनसे यह कहना मुश्किल है की वही तारातंबोल है। तारातंबोल नगर का नाश क्यों और कैसे हुआ यह बात आजतक गुप्त है। खैर हम अपने इतिहास के गौरवशाली पन्नों को पढकर चिंतन करे की हमने क्या खोया और क्या पाया।

प्रस्तुत पुस्तक हेतु प्रेरित करने वाले पू. मु. श्री चारित्ररत्न वि.म. का में ऋणी हूं तथा प्रुफ संशोधन में सहायक पू. मु. कल्याणपद्मसागरजी म.सा. मैं आभारी हूँ। प्रस्तुत पुस्तक प्रकाशनमें सहायता हेतु में "मिशन जैनत्व जागरण" के सभी ट्रस्टीवर्यो का आभारी हूँ। **Last but not a least** मेरे गुरुदेव पू.मु. श्री जंबूविजयजी म.सा. की कृपा दृष्टि सदैव बरसती रहती है अतः उनका स्मरण कर के आगे बढते है।

- भूषण शाह

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 3

जैन नगर तारातंबोल

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

(1) तारातंबोल नगर : एक ऐतिहासिक दृष्टि

जैन धर्म न केवल प्राचीन है वरन् वह विश्व के अनेक दूरस्थ भू-भागों में प्रसारित एवं पूजित था। इसका विवेचन हमें कतिपय जैन व्यापारियों द्वारा व्यापारिक संबंधों और समुद्री यात्राओं के वर्णन में ही मिल पाता है। आज से तीन चार शताब्दियों पूर्व के कतिपय हस्तलिखित ग्रंथों में हमें ऐसे कुछ महत्त्वपूर्ण सूत्र मिले हैं, कि भारत से बाहर भी अफघानिस्तान, ईरान, इराक, टर्की आदि देशों तथा सोवियत रुस के अजोब सागर से ओब की खाडी से भी उत्तर तक तथा लाटविया से अल्लाई के पश्चिमी छोर तक किसी काल में जैन धर्म का व्यापक प्रसार था। इन प्रदेशों में अनेक जैन मन्दिरों, जैन तीर्थंकरों की विशाल मूर्तियों की विद्यमानता का भी इनमें उल्लेख है। कतिपय व्यापारियों और पर्यटकों ने जो इसी दो तीन शताब्दियों में हुए हैं, इन विवरणों में यह दावा किया है, कि वे स्वयं अनेक कष्ट सहन करके इन स्थानों की यात्रा करके आये हैं।

ऐसे विवरणों में सर्वप्रथम विवरण बुलाकीदास खत्री का है, जो सं. १६८२ (सन् १६२५ ई.) में घोडों का काफिला लेकर अपने साथियों के साथ उत्तरापथ के नगरों की यात्रा पर निकला था। यह काफिला विभिन्न नगरों एवं तीर्थों की यात्रा करता हुआ नौ वर्ष बाद लौटकर अपने घर आगरा पहुँचा। इस यात्रा में उन्हो आगरा से यात्रा प्रारम्भ करके लाहौर, मुल्तान, कंधार, इस्तफान (इसकानगर), खुरासान, इस्तंबूल (आसतंबोल), बब्बर, बब्बरकूल या बाबर तथा तारातंबोल नगरों को देखा, जिनमे से कतिपय नगरों का उन्होंने सविस्तार वर्णन भी किया है। इन नगरों के मध्य की पारस्परिक दूरी उन्होंने क्रमशः ३००, १५०, ३००, ८००, ६००, १२००, ५०० और ७०० कोस दी है। विभिन्न हस्तलिखित ग्रंथों में इस विवरण के अनेक संस्करण मिलते हैं, जिनमें यत्र तत्र थोडा बहुत अंतर भी है। एक संस्करण में काबुल और परेसमान नगरों का भी यात्रा मार्ग में उल्लेख है। स्व. मुनि कान्तिसागरजी, श्री सागरमलजी कोठारी, [३८६] श्री वासुदेव शरण अग्रवाल [३८७] एवं श्री अगरचंदजी नाहटा ने भी इस विवरण के कई एक संस्करण प्रकाशित किए हैं।

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 4

दूसरा विवरण मिलता हैं, अहमदाबाद के व्यापारी पद्मसिंह की सपरिवार दूर देशान्तर की यात्रा का। यह विवरण स्वयं पद्मसिंह ने यात्रा से लौटकर हैदराबाद से अहमदाबाद में रह रहे रतनचंद भाई को लिखे अपने पत्र में किया था। यह पत्र भी मुनि श्री कान्तिसागरजी ने प्रकाशित किया था। पद्मसिंहजी ने यह यात्रा सं. १८०५ में प्रारम्भ की थी और १६ वर्ष बाद सं. १८२१ में वह लौटकर सकुशल स्वदेश आए थे।

उनकी यात्रा का मार्ग इस्तंबूल तक प्रायः वही रहा, जो बुलाकिदास का रहा था। लेकिन उसके आगे वे अजितनाथजी के मन्दिर से युक्त किसी ताल, तलंगपुर, चंद्रप्रभु तीर्थ, नवापुरी, पाटण और तारातंबोल (द्वितीय) की यात्रा का विवरण देते हैं। पद्मसिंहजी इस्पहान को आशापुरी तथा इस्तंबूल को तारातंबोल नाम देते हैं। [३८८] ऐसा संभव है, कि ध्यान चूक जाने से या विस्मृति से प्रवाह में लिखा गया हो।

दिगम्बर जैन पुस्तकालय कापडिया भवन, सूरत [३८९] से प्रकाशित एक अन्य ग्रन्थमाला में भी उत्तर दिशा के तीर्थ वर्णन में पूर्व से पश्चिम में बहने वाली गंगानदी के किनारे पर अनेक जैन मंदिरों की विद्यमानता का उल्लेख किया गया है। उसमें तारातंबोल में भी जैन मंदिरों और मूर्तियों की वंदना के साथ-साथ, किसी जवला-गवला नामक शास्त्र की विद्यमानता की भी सूचना दी है। तीर्थमाला में तारातंबोल के मार्ग में मांगी तुंगी पर्वत पर २८ हाथ (४२ फुट) चौडी तथा ४८ हाथ (७२ फुट) ऊँची मूर्ति का भी उल्लेख है, जिसके पाँव के अँगूठे पर २८ नारियल ठहर सकते थे। इसी प्रकार एक ऐसे सरोवर का भी उल्लेख किया है, जिसमें ६ हाथ **x** १० हाथ आकार की शान्तिनाथजी की प्रतिमा स्थित थी।

पद्मसिंहजी ने इस्तंबूल में मुकुट स्वामी की ३८ हाथ **x** २८ हाथ (५७ फुट **x** ४२ फुट) आकार की निराधार खडी मूर्ति का वर्णन किया है, जिसके पाँव के अंगूठे पर भी उपर्युक्त मांगीतुंगी पर्वत पर खडी मूर्ति के पाँव के अंगूठे के समान २८ नारियल रखे जा सकते है। ऐसा प्रतीत होता है, कि दोनों वर्णन एक ही मूर्ति के

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

हैं । इस्तंबूल में निराधार खडी इस विशाल मूर्ति का वर्णन हमें इसी नगर में खडी हरक्यूलिस की इस विशाल मूर्ति की याद दिलाता है, जो विश्व के सात आश्चर्यो में से एक मानी जाती रही है ।

पद्मसिंहजी इस्तंबूल से ६०० कोस की दूरी पर स्थित किसी ताल में अजितनाथ जी की २० हाथ x ६ हाथ या ३० x ९ वर्ग फुट आकार की मूर्ति की विद्यमानता का वर्णन करते हैं । जहाँ वे नाव के द्वारा गये थे । वहाँ से वे ५०० कोस दूरस्थ तलंगपुर नगर का वर्णन करते हैं और बताते हैं, कि वहाँ २८ जैन मंदिर थे । तलंगपुर से वे ७०० कोस दूर नवापुरी पट्टन जाते हैं व मार्ग में किसी चन्द्रप्रभु के मंदिर के दर्शन भी करते हैं । लेकिन उन्होंने इस मंदिर के निश्चित स्थान के बारे में कुछ नहीं लिखा । नवापुरी पट्टन से ३०० कोस दूर स्थित तारातंबोल नगर का उन्होंने बडा ही उत्तम वर्णन किया है । इस नगर में उन्होंने अनेक जैन मंदिर, मूर्तियाँ व हस्तलिखित ग्रंथ संग्रह देखे तथा जैन मुनि के दर्शन किए । सूरत से प्रकाशित दिगम्बर जैन तीर्थ माला में तारातंबोल में किसी "जवला गवला" नामक शास्त्र की विद्यमानता की सूचना पद्मसिंहजी के वर्णन में हस्तलिखित ग्रंथों के विद्यमान होने की पुष्टि करती है ।

बुलाकीदासजी के द्वारा किया गया तारातंबोल का वर्णन भी बडा ही सजीव है । वे लिखते हैं, कि वहाँ बादशाह हिन्दू थे तथा जैन धर्मावलंबी थे । उनका नाम जैचंद सूर, चन्द्रसूर या सूरचन्द्र था । वहाँ, जैनों के मंदिर सोने व चांदी के बने हुए हैं, मूर्तियाँ रत्नजडित हैं । राजा के साथ प्रजा भी जैन धर्मानुयायी थी । यह नगर सिंधुसागर नामक नदी के किनारे पर स्थित है । इसी के अन्य संस्करण में तारातंबोल के आसपास स्थित मंदिरों की संख्या ७०० दी गई है । शहर के मध्यम में आदीश्वरजी के विशाल मंदिर के स्थित होने की बात लिखी है, जिसमें १०८ जडाव की मूर्तियाँ थीं, प्रतिमाओं की वेदियाँ स्वर्ण जडित थीं, आदिश्वरजी का सिंहासन भी जडाऊ था । मंदिर में ७०० मण सोने की ईंटों का उपयोग किया गया था तथा इस मंदिर में त्रिकाल पूजा होती थी । मुनि शीलविजयजी भी तारातंबोल का लगभग ऐसा ही

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 5

वर्णन करते हैं ।

बुलाकीदासजी ने इस्तंबूल से आगे ५०० कोस बब्बर देश या बाबर नगर का नामोल्लेख किया है । शीलविजयजी उसे बबरकूल कहते हैं । वे लिखते हैं, कि "बबरकूल वशि पंचासे, पवन राज ईहा सुधि बसे" अर्थात् इस्तंबूल से पाँच सौ कोस दूर बबरकूल है, जहाँ पवनराज का भी निवास है । यह वर्णन बेबीलोनिया के उन मूल पुरुषों की याद दिलाता है, जो मतु या मर्तु (वैदिक मरुत) नाम के वायुदेवता के पूजक थे । शीलविजयजी का बब्बरकूल स्थित पवनराज व बेबलोनिया में "मरुत" देवता की स्थापना से प्रतीत होता है, कि यह बब्बरकूल बेबीलोनिया ही होना चाहिये । यहाँ के निवासी भारत से निकले पणि और चौल ही माने जाते हैं । बेबीलोनिया, सीरिया के दक्षिण, फारस के पश्चिम और अरब के उत्तर में स्थित प्रदेश हैं । लेकिन यात्रा मार्ग के अन्य नगरों को देखते हुए प्रतीत होता है, कि केस्पियन सागर के दक्षिणी तट पर बसे बाबुल को ही बाबर, बब्बर या बबरकूल कहा गया होगा । पद्मसिंहजी ने अजितनाथजी के मंदिर की दूरी इस्तंबूल से उतनी ही बताई है, जितनी बुलाकीदास ने बाबर की । अत: अनुमान लगाया जा सकता है, कि वह मूर्ति बाबर में ही रही होगी । तलंगपुर की स्थिति के बारे में कुछ निश्चित कहना कठिन है । तलंग शब्द उन हूणों और तुर्को के लिए प्रयुक्त शब्द है जो गोबीके रेगिस्तान, इस्सिकुल और सिरदरिया में ऊँचे पहियों की गाडी रखते थे । बुलाकीदास जी इस्फान में और शीलविजयजी ने इस्तंबूल में इसी जाति का राज्य होना बताया है । अत: प्रतीत होता है, कि सिर दरिया के किनारे ताशकंद से थोडा उत्तर में बसा तुर्किस्तान ही पद्मसिंहजी का तलंगपुर हो सकता है ।

पद्मसिंहजी तलंगपुर या तुर्किस्तान से नवापुरी पट्टण गए । नगर के अन्तर में पट्टन शब्द के प्रयोग से प्रतीत होता है, कि यह कोई नदी या समुद्र के किनारे स्थित व्यापारिक नगर था । तुर्कीस्तान और नवापुरी के मध्य वे चन्द्रप्रभु तीर्थ भी गए । इसकी स्थिति वहाँ रही होगी यह कह पाना कठिन है, लेकिन नवापुरी पट्टन ओब नदी की खाडी में बसा नोवा पोर्ट ही प्रतीत होता है, जिसकी स्थिति

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

चन्द्रप्रभुजी से ७०० कोस कही गई है। तारातंबोल नवापुरी पट्टन से ३०० कोस दूर कहा गया है।

वास्तव में तारातंबोल किसी एक नगर का नाम नहीं है। यह इर्तिश नदी के किनारे बसे तारा और तोबोलस्क नाम के दो नगर है। तारा इर्तिश और इशिम के संगम पर बसा है और तोबोलस्क इर्तिश और तोबेल के संगम पर। इन दो नगरों के मध्य की दूरी बहुत अधिक नहीं है। इसीलिए इनके नामों का प्रयोग एक दूसरे की पहचान के लिए साथ-साथ किया गया है, जो सामान्य प्रथा रही है। बुलाकीदास जी, शीलविजयजी म. आदि इसे सिंधुसागर नदी पर स्थित बताते हैं। संभवतः इर्तिश और भारतीय सिंधु नदी रुसी उच्चारण ईंत में उच्चारण साम्य के भ्रम से उन्होंने इर्तिश को ही सिंधु सागर कहा होगा।

शीलविजय ने तारातंबोल से १०० गाउ (गव्यूति) दूर जिस स्वर्ण कांतिनगर का उल्लेख किया है, वह "अल्ताई" का संस्कृत रुप है। तुर्की और मंगोल भाषाओं में अल्ताई का अर्थ हे, स्वर्णगिरी। अल्ताई की पहाडियों में स्थित सोने की खानें अज्ञातकाल से ही सारे एशिया की सोने की मांग को पूरा करती रही है। अतः भारतीय व्यापारियों का भी अवश्य ही इन खानों से संबंध सदा से रहा होगा। यह कल्पना की जा सकती है।

शीलविजयजी ने जैन धर्मी प्रजाजनों से भरे-पूरे जिस लाट देश का तारातंबोल के साथ उल्लेख किया है, वह स्पष्टतः लाटविया है। इन वर्णनों से अल्ताई से लाटविया तक की समस्त प्रजा जैन धर्मावलंबी सिद्ध होती है।

उपर्युक्त विवेचन से यह ज्ञात होता है, कि इन उल्लिखित स्थानों में भारतीयों ने पूर्वकाल में अवश्य ही अपने मंदिर, जिनालय आदि बनाए होंगे। साधु-संत भी वहाँ रहते होंगे, उन्होंने शास्त्र भी लिखे होंगे। लेकिन इस्लाम धर्म के प्रचार-प्रसार और पश्चिमी देशों की राजनैतिक उथल-पुथल ने भारतीयों के इन प्रदेशों से प्राचीन संपर्क को तोड दिया। बौद्ध धर्म के प्रभाव ने अपनी समान प्रकृति के जैन धर्म के अवशेषों को आत्मसात कर लिया और इसी से अब तक

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 6

शोध-खोज करनेवाले विद्वानों ने इसे बौद्ध धर्म से ही संबंधित किया है। बौद्ध धर्मोपदेशकों ने भारत से बाहर जाकर शताब्दियों तक धर्म-प्रचार किया और जैन या वैदिक धर्मावलंबी प्रचारकों ने ऐसा नहीं किया होगा, यह बात समझ में नहीं आती है। अतः ये यात्रा विवरण और प्रस्तुत तीर्थों का स्थान निर्धारण अवश्य ही इनके शोध का मार्ग-प्रशस्त करते हैं। इसे हम पुरातात्विक साक्ष्यों के द्वारा परख कर और अधिक प्रामाणिक सिद्ध कर सकते हैं।

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

(2) तुर्की में ७०० जैन मंदिर....

लगभग ३०० वर्ष पहले लिख्रि गई राजस्थानी भाषा में बुलाख्रीदास ख्रन्ना की वार्ता नामक एक हस्तलिख्रित प्रति अभी-अभी हाथ लगी थी। इस हस्तप्रति से एसा जाननेमें आता है कि युरोप और एशिया महाद्वीप की सीमा जहाँ मिलती है वहाँ तुर्किस्तान की राजधानी इस्तंबुल के नजदीक तारातंबोल नाम के किसी शहर में जैनो के ७०० जिनमंदिरों का अस्तित्व हुआ करता है।

हस्तप्रति का सारांश कुछ इस प्रकार है १६८४ के वर्ष में मूलतान निवासी बुलाख्रीदास ख्रन्ना नाम का एक व्यकित अहमदाबाद, आगरा, लाहौर, मूलतान और गंधार के लाहोर, ख्रुराषण, इस्तंबुल नगर आदि स्थानो पर से होता हुआ तारातंबोल नगरमें पहुंचें थे। भारत में उस समय शाहजहाँ का शासन चल रहा था और एसा कहाँ जाता हे कि देश -विदेश में चल रही गति-विधियों के अभ्यास हेतु शाहजहाँ ने बुलाख्रीदास को भेजा था।

सोने की मूर्तियाँ....

तारातंबोल शहेर में ७०० शिख्ररबद्ध मंदिर थे...। इन मंदिरो की दीवारे सोने से मढी हुई थी तथा मूर्तियाँ पूर्ण रुपेण सोने की थी। शहर के बृहत्मार्ग पर आदीनाथश्री ऋषभदेव प्रभु का मंदिर था, मूर्ति ख्रडगासन में स्थित थी और सिंहासन सोने का था।

अपने प्रवास काल के दौरान मार्ग में आनेवाले इस्तंबुल शहर के बारे में वर्णन किया है. शहर का राजा रुमी बादशाह था, वह प्रजा को दर्शन देने के लिए प्रति ६ महिने महल से बाहर आता था। शहर का विस्तार ३६-२४ कोस का था। उसकी सेना में लाख्रों की संख्या में हाथी, घुडसवार और पैदल सैनिक थे।

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 7

(3) सम्राट सिकन्दर के साथ गये जैन .....

शहरों और मूर्तियो से ओतप्रोत वर्णन आदि छोड दे तो भी बुलाख्रीदासजी की यह कथा इतना स्पष्ट करती है कि तत्कालिन तूर्किस्तान की राजधानी इस्तंबुल के आस-पास (३५० वर्ष पहले) जैन मंदिर होंगे....। इसके समर्थन में इतिहास साक्ष्य है कि भारत की सीमा पर आकर वापिस लौटनेवाला ग्रीक विजेता सम्राट सिकन्दर अपने साथ विद्वानो को ले गया था। इन विद्वानों में थोडे जैन साधु भी थे। ये जैन साधु युनान जाते समय जैन धर्म के प्रचार हेतु जैन मंदिरों की स्थापना करते गये होंगे.... एसा संभवित है इन मंदिरों का अस्तित्व १६-१७-१८ वी शताब्दि तक बना रहा होगा एसा प्रायः अनुमान है। फिर भी एक दुसरा आधार है... सन् १९१८ से १९२२ तक कि राजधानी कैरो में रोशनलाल नाम का एक व्यापारी रहता था... उसने भी एसा अभिप्राय दिया कि उसके आगे नदी के तट पर उसने पूरी ऊँच्राई वाले २४ तीर्थंकरो की मूर्तियाँ देख्री थी।

इसके पश्चात् मध्यएशिया के कुछ स्थानो की ख्रुदाई के दरम्यान बौद्ध एवं जैन संस्कृति के अवशेष भी मिले है। इस प्रकार तुर्किस्तान, तारातंबोल आदि शहरो में जैन मंदिरों का अस्तित्व रहा होगा उसमें कोई आश्चर्य नहीं है।

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

(4) शेठश्री बुलाखीदास खन्ना की हस्तप्रति

चलिए मेरे प्यारे मित्रो । अब देखते है संवत् १६८४ के समय में जब शाहजहाँ की आज्ञा से मूलतान निवासी ठाकुर बुलाखीदास खन्ना जब तारातंबोल नगरी को देख आया तब उसने स्वहस्ताक्षरों. से उसे लिपिबद्ध किया.... देखते है उनके अक्षर उन्ही के शब्दो में.... तारा तंबोल नगर की भावयात्रा....

अथ तारातंबोल नगर री वात लिखिय छे....

संवत् १६८४ मागसर वदि-१३ पातसाह श्री शाहजहाँ दिल्ली राज करे छे ते समे की वाता छे, मूलतान को वासी जात की खत्री (क्षत्रीय) ठाकुर बुलाखी तिहां देसा की वात आपकी निजरदेख आयो ताकी, ए वात (यह कोपी) नकल छे, प्रथम देश गुजरात मध्ये श्री अहमदाबाद नगर तासु कोस ३०० मूलतान छे. मूलतान सुं कोस २०० लाहोर छे, लाहोर सेतीकोस ३०० गंधार छे, गंधारसु कोस ९०० इसफानगर छे. ताको बाजार कोस १२ लांबो छे.. इसफानगर कोस ६०० खुराषाण छे.. खुराषाण को बाजार कोस १४ लांबो छे. खुराषाण कोस १२०० इसफतंबोल नगर छे. तिहां को बाजार कोस ३६ लांबो छे. कोस २४ चोडो छे. तिहां रेमीयातिसाह राज करे छे. घोडा २४ लाख छे. हाथी १ लाख २५ हजार छे, ३ लाख गुलाम छे, ५ लाख वादी छे. १ कोड १५ लाख छे नगर के चोपेर कोट चोकौर छे, पातसाह की रहास को कोट तांबा को छे. इसफंतबोल से कोस १४४४ चवदसैवव्वर देश छे तिहां सपेदरे सम होवे छे.. सो माणस का लोही में रंगीजे छे. किरमइया पाट रंगीजे छे. तीहां से कोस ५० आकल-नगर छे. आकलनगर से कोस ७०० तारातंबोल नगर छे.

तिहां (आ तारातंबोल नगरमां) महाराजा सूरचंदजीराज करे छे. तोहर के बाजार कोस ४० लांबो छे. कोस ३६ चोडो छे. नगर चोकर (चोकोर) ५ कोट तांबा को छे. कोट माहेथी रुपा का छे बाकी सोना का छे. तिहां राजा जैन धर्म पाले छे. तिहां नगर में देहरा सोना का छे दहेरा सातसे (७००) शिखरबद्ध छे. तिहां नगर मध्ये बीच चौक छे तिहां दहेरो श्री आदिनाथ जी को छे, कोस २ के विस्तार में छे., दहेरा को पुठो सोना को छे और दहेरा को काम रुपा को छे. थांभा दहेरा का सोना

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 8

का छे. प्रतिमा सोना की छे. प्रतिमा ऊंची धनुष-६, मण-१०८३ तोल की छे. वेदी (वेदिका) सोनाकी छे. संघासन जडाव को छे. दहेरा उपर कलश मण सातसो ७०० को छे. ते सोना के दहेरा आसपास बहुत दहेरा छे. तिहां प्रतिमा तीन (३) चोवीसी की छे तिहां त्रिकाल पूजा हुए छे. स्नात्र नाटक भगवान के आगे होय छे. (तिहां) साधु रहे छे. राजा नित्य खाण (व्याख्यान-प्रवचन) सुणे छे. राजा साधुने आहार-पाणो देने भोजन करे छे. इसी भांती जैन धर्म री श्रिति (स्थिति) छे. तारातंबोल पास सिंधु नदी बडै विस्तार में वहे छे. अहमदाबाद (कर्णावती-राजनगर) हुंती तारातंबोल नगर कोस ५६५० छे. तिहां की वात सत्य छे ताकि (आ पत्र) नकल छे.

॥ इति तारातंबोल नगरी री वार्ता संपूर्ण: ॥

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

(5) शेठ पद्मचंद्रजी की हस्तप्रति

अब हम आपको बताएगे सन् १८०५ से १८२१ तक शेठ पद्मचंद जो खुद इस तारा तंबोल नगरी की यात्रा कर आए.. चलिए पढते है उनके अनुभव... उन्ही के शब्दो में....

तारा तंबोल नगरी की हकिकत....

एक श्रावक सोह साल तक यात्रा करके आया उसका खत लिखा है.... सीधा चाउ प्रणी पंथ थकी.... भाई रतनचंदन चरणान् चरम श्री हैदराबाद से लिखित भाई पद्मचंद का प्रणाम पढना । जत अत्रे क्षेमकुशलता है । आपकी क्षेमकुशलता का खत लिखना... हम हमारे सपरिवार सींध देश यात्रा करने संवत् १८०५ मध्य गये थे उसकी विगत लिखी है ।

प्रथम अहमदाबाद से ३०० आगरा शहर है, वहां से कोस ४४० (५०००) तारातंबोल शहर है । उसकी विगत.... अहमदाबाद से कोस ६००० लाहोर है । वहाँ से कोस १५० मूलतान शहर है । वहाँ से कोस ३५० बंदीर देश है । वहाँ से कोस ९०० आशापुर नगर है उसका बाजार कोस १२ का है । वहाँ से कोस २००० श्री तारातंबोल है ।

पहली हकीकत (विगत) श्री अहमदाबाद से मूगा (गौतम) स्वामी की मूर्ति कोस ६०० है । वो पहाड पे बिन आधार है । श्री मूगा स्वामी की मूर्ति चौडी २८ हाथ की है । उसकी ऊँच्चाई भी ३९ हाथ की है । उनके पगलीया के नख पे ८ नंग श्रीफल रहता है । वहाँ की यात्रा करके हम लोग आगे चले । वहाँ से कोस ६०० गये तो वहाँ १ बडा तालाब आया तालाब वो का अनुमान १२ कोस का है । उस तालाब के बीच में श्री आदीनाथजी का मंदिर है । वहाँ नौका में बैठकर हम लोगो ने दरिसण किया । श्री आदिनाथ की प्रतिमा ६ हाथ की (चौडी) है ऊँची भी १० हाथ की है । वहाँ की यात्रा करके हम लोग आगे चले । वहाँ से ५०० कोस आगे गये.... वहाँ श्री तोलीगाधूंर नगर ५० कोस का है । वहाँ हम लोग गये... २८ श्री जिनप्रासाद का मंदिर है । वहाँ श्री मंदीर (सीमंधर) प्रभु का देवालय है वो बहुत बडा है । वो देवालय

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 9

में १२८ प्रतिमा है । वो प्रतिमा का दरिसण करके हम आगे चले । वहाँ से ७५० कोस गये । वहाँ श्री नाबीपुर पाटण है । उसके आगे कोस ३०० है । वहाँ तारातंबोल नगर बडा है । ४०० कोस लंबा है । उस नगर का कोट ताम्र का है । वहाँ राजा का महल सफेद धातु का है । राजा का नाम धरसाल महाराजा है । श्री साधु व्रधमान (वर्धमान) जी राज करता है । व्यापारी लोग हीरा-माणेक-मोती-झवेर-सोनुं-रुपुं-कपडादि का व्यापार करता है । सब अपना दुकान खुल्ला रखके घर जाता है । लेकीन कोई किसी की चीज लेते नहीं... (चोरी करते नहीं) एसा लोग महाधरमी है।

इस तारातंबोल नगर का बाजार ६० कोस का है । उस नगर मध्य श्री जिनमंदिर का देरा है । जो ७०० देहरा है । वहाँ का राजा-परजा सब जैनी है । जैन (अलावा) बिना अन्य देव-देवी को मानते नही । उस नगर मध्ये प्रतिमा की गिनति इस प्रकार है.... जिसकी विगत है.... ४००० लीला माणेक की है । ५ वनसन की है जो अंगुष्ठ प्रमाण है । १५००० सफेद पाषाण की है । ६ काशवर्णी है, वह भी अंगुष्ठ प्रमाण है । ४८७ श्यामरत्न की है । ४ नीला रत्न की है, वह भी अंगुष्ठ प्रमाण की है । ४५४५ हरा (लीला) रत्न की है । ९ माणेक की है, वह भी अंगुष्ठ प्रमाण की है । ३४८६ धातु की है । १ मोती की है, वो भी अंगुष्ठ प्रमाण की है । १६ बावना चंदन की है । ११ गेरु चंदन की है । वो प्रतिमा की गिनती २४,७६४ है । सारांश... उपरोक्त प्रतिमा लिखी वो प्रमाण से है ।

वहाँ का राजा महल मध्ये तथा चौक मध्ये श्री रिखबदेव आदिनाथ-ऋषभदेव) का देरासर है । वो भी ४ कोस ऊँच्चा है । एक एक देशी मंदिर ५१ एसा सारदेशी का मंदिर ५३६ है । वहाँ जिनप्रासाद का थंबा ताम्र का है । उस कोट का थंबा रूपा का है । कांगुरा सुवर्ण का है । अन्य थंबा सोने का है । प्रासाद का सिंहासन सोने का है और जडाव का है। उसी सिंहासन पे प्रतिमा ३ चोवीशी की है । उस प्रतिमा का वर्ष अलग अलग रंग है। धोबा काला एसे सब अलग वर्ण की है । वहाँ का राजा प्रतिदिन प्रतिमा की (त्रि) काल पूजा करता है । बहोत गुणवान है । जैन धर्मी है । समतावंत, शीतवंत (शीलवंत), यशवंत, धनवान एसे सद्गुण सहित बिराजमान है । उस नगर में हम ४ दिन रुके थे । वहाँ अन्य देवालय है । वहाँ की प्रतिमा सोवनवर्णी तथा जडाव की १३२ है । अन्य प्रतिमा १०५ स्फटिक है । दो

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

रत्न की है । एसी प्रतिमा का दर्शन किया । उस नगर मध्ये सज्ञ ने नेमाकुट महाधर्मी है । (ते गणी गणी जा सके.... बात के बीच परणीकटसे) वहाँ से ३० कोस जिनमंदिर है तथा बंदीर (बद्री) है । मालबद्री (मूलबद्री) मध्ये रायपेती है । वहाँ जिनमंदिर का भंडार (ज्ञानभंडार) मध्ये (हरबन) करोड का है । जीव धोला (जयवधला) है । अन्य धवल का गरथ (ग्रंथ) है । वो गरथ १ लाख २ हजार का है । अन्य गरथ १ लाख ८ हजार तीरलोक है । वो ताडपत्र पे लिखा है । वो भी कोई पंडित पढ नही सकते । उस नगर का वनमध्ये श्री शांतीनाथजी रहते है । उस वन मध्ये सर्प तथा वाध का भेखड है । वहाँ रिखबदेवजी तथा नेमजी रहते है । उसकी उम्र १० साल की है । शाम के समय भक्षण (भिक्षा) करने नीकलता है । सुजता आहार मिले तो लेता बाकी नहीं लेता... एसा साधु का दरिसण किया । बाद में आगे चले....।

वहाँ से ६५ कोस श्री गंगानगर है । उस नगरका वनमध्ये श्री रिखभनाथ का देरासर है । तिहाँ प्रभावशाली साधु रहता है । वो १ मास में दो-चार पारणा ही करता है । जोगवाई होवे तो पारणुं करते नही तो दुसरे मास.... एसा मुनिराज का दरिसण हुआ। वहाँ से हम आगे चले.... उसी समय ये साधुजीने हमको मना किया कि तुम लोग आगे जाना मत (क्योंकि) यहाँ से ३०० कोस (आगे) एकटांगीयो मुलक है (जो बहुत ही राक्षसीवृति वाले लोगो का देश होगा के जहाँ जाने के बाद कोई वापस नहीं आ सके... इसीलिए साधुजीने आगे जाने को ना कहाँ होगा) । एसी हकिकत हमको प्रभावशाली साधुजीने बताई.... इसलिए हम संवत् १८२१ के साल मध्ये इतनी यात्रा करके हम लोग (हमारा) घर आये । इतने में मुखस गोपी का दरिसन किया ये खत भगवान के गुणो का है । ये खत कोइ पढे या सुने उनको बहुत लाभ होगा ।

॥ भूलचुक होवे तो मिच्छामि दुक्कडम् ॥
॥ इति श्री भगवान का खत सपूर्णम् ॥
संवत १९३२ का ज्येष्ठ वद १४ दिने... खुशालचंद...
॥ श्रीरस्तु ॥

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 10

(6) शेठ अमरचंद्रजी की हस्तप्रत

चलिए... मेरे प्रिय मित्रो । अब हम आपको राजनगर निवासी श्री अमरचंदजी के द्वारा कि गई तारातंबोलादि नगरीयों का अनुभव उन्ही के शब्दो के माध्यम से करवाते है.... । वे तारातंबोलादि नगरीयों में कैसे और कौन से मार्ग से गये थे... वो भी इसी पत्र से जानने मिलेगा.... ।

स्वस्ति श्री राजनगरे लिखयंत अमरचंद्र जी.....

राजनगर (अमदाबाद) कोस-१३ कोट कोस ४ नो छे. तिहांथी कोस १०० सीरोही तिहां थकी कोस ७५ भेडतो (मेडता) १३२ कोस आगरो (आगरा) जिहां साहिजहां राज्य करे छे । १८००० हाथी, ५,००,००० घोडा बीजी रिद्धि गुणी तेथी कोस ३० लाहोर, १५० कोस मूलतान, ३००० कोस खंधार, तीहाथी कोस ९०० इस पन्नदेस... तिहां इसपन्ननगर २४ कोस विस्तार, ८ कोस बजार... २५०० तिलंगदेस तिलंगपति साह... ७०० कोस रोमसाम नगर, ३५ कोस विस्तार, १५ कोस बजार, तिहां बबरपातसाह तिलंगी, तिहांथई ८०० कोस सासतानगर... ३८ कोस विस्तार, १२ कोस बजार , तिहांथी ५०० कोस खुरषाण, १५ कोसनो (पर) बाजार । मुगलराज करे छे.... १२ कोस इसकतंबोल, ७२ कोस विस्तार, ४८ कोस बाजार, लोहरो कोरोमी (लोखंडना कोठारोमांथी) पातसाह मास ५ बाहिर नीकले । २४,००,००० घोडा, ४०,००,००० हाथी, ३,००,००० महाजोधी क्षुभट ५,००,००० घोडा पाखरीया सुभट, ३,००,००० उवी जले है । १५ स्त्री छे । ३,००,००० ओबराव (उंभराव) ५,००,००० वादी और ३,००,००० छडीदार और ऋद्धि धणी.... पार नावे.... । तिहाथी ५०० कोस बबरकोट... तांबीनो नगर कोट लोढानो दरबार रोज तिहां रेशम रंगीजे छे । भार थोडो मूल धणो.... बिघोडे १ माणस जुडे..... चाले.... मांस आहारी होय छे । तिहाथी १०० कोस अटवी (जंगल).. वृक्ष घणा.... में तिहां वाघणी-डाकी (डाकण जेवी) मंस आहारी (मांसाहारी) - मनुष्यभक्षीने अग्निथी तिंहाथी ७०० कोस तारातंबोल नगरे छे, ४८ कोस विस्तार, १५ कोस बजार.... बिचे (मध्य में) चौमुख प्रासाद ऋषभदेवनो तत्र राजा सूरचंद जेन (जन), लोक (प्रजा) जिनाज्ञा पाले, श्री विमलप्रबोध आचार्य छे.

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

२०० कोस पाणीपंथ की गोमट (गौतमस्वामी).... कोस हजार (२०००) दोय है, परबत (पर्वत) उपर निराधारा खडी हे.. गोमट-सामीजी (गौतमस्वामीजी) की प्रतिमा चोडी हाथ १८ (अढार), उंची हाथ ५४ (चोपन) की खडे जोग है । पग का अंगुठा उपर नारेल नालीयेर १३ (तेरे) समाते है इसी हम जात्रा की । उहा से हम आगु चले.... तिहां औरंग नामा नगर है.. तिहां तलाव एक कोस बारे है उस तलाब के बीचकोस एक को मंडन है । उस मंडल में चेत्या (चेत्य-मंदिर) ४ (च्यार) है... च्योमुख है.... प्रतिमा एक देहरा में अजितनाथ की है.... चौडी हाथ ४ (चार) है... ऊंची हाथ १२ बारे की है ... फिटक्की (स्फटिक) की है । दूसरी प्रतिमा हाथ ९ (नव) आदिनाथ की है.... चौडी हाथ १ १.२ (दोड) की है ऊंची हाथ ४ (च्यार) है । सो प्रतिमा वि (पण) चंदन की है और दुसरी प्रतिमा-दहेरा (चार) में बहोत है । हम नाव चढकर गये थे । सो उहां से दरण की आश लि उहा से आगु हम चले तिहां तिडगपुर नगर है । उहां वन मैं जेन (जैन) का दहेरा बहुत है । २५ (पचीस) बिंब है, तिस दहेरा में प्रतिमा १ (एक) कसोटि की है हाथ ९ उंची, हाथ ३ १.२ (साडात्रण) चौडी है... बहोत मनोहर है.... दुसरी दुसरी प्रतिमा हजारा है...।

उहां से हम आगु चले... कोस १०० गये.. तिहां तिलघाटी का मुलक है । तिहां निवासपुर पाटण है । सो समुद्र की किनारी है । तिहां एलची का वन है । काली मरचा की वेल है । तिहां (मुक्तागिरि) परबत है । उस पर जैन का देहरा ५३ (त्रेपन) है । बडे जोग है इस दहेरा में प्रतिमा बहोत है । (आरा आण) चोथा काल समान है । आराधना जोग है ।

उहां दरसण कर आगे चले सो करणाटक के लोका जैन विना दूसरी बात नही.... । राजा और प्रजा सब वहाँ जैन है । करणाटन देश विचे करणाटक सहर है । जो सहर विचे एक हजार चैताला (चैत्यो-मंदिरो) है । सब दहेरा की प्रतिमा हम गणी सो गण कर लिखी है । प्रतिमा १५,००० (पन्नर हजार) है, दुसरी प्रतिमा ५१ (एकावन) है । तिसको विचारकर लिख्यी है । प्रतिमा १ (एक) लसणीये (पत्तथरनी एक जात) की है..... सो आंगुल १०८ की है । प्रतिमा ११ मोती की है..... आगुल आठ.. आठ की है । प्रतिमा १ गोमेद की है । प्रतिमा ७ पुखराज की है.... सो अंगुल

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 11

१ १.२ की है । प्रतिमा १४ चिरंतन की है । सो आ प्रतिमा अंगुल ३ १.२ की है । प्रतिमा १० हीरा की है.... अंगुल ४ की है । एसी प्रतिमा भारी बहोत है । मनोज्ञ छे । हवे प्रतिमा सरवे एकावन है । वले (वली) दुसरी प्रतिमा बहोत है.... एसा दरिसण किया.... तिका पुष्पप्रभाव से भी मोक्ष होये....

करणाटक का दरबार मांहे विचे (मध्यमे) १०८ (एकसोआठ) थांबा का देवल है । उस दहेरा में प्रतिमा अतीत-अनागत-वरतमान की चोवीसी की प्रतिमा ७२(बहोतर)... सब फिटक की (स्फटिक की) है । धोली ने राती पीली लीली सब आप आप वरण की है । दुसरी प्रतिमा सब है...... ३००० (तीनहजार) है.... देहरा बहोत ऊंचा है । २१ मंडप कर सहेत है ।

राजा हमेश सेवा करत है, राजा बहुत गुणी है । उस नगर का वन में १ (एक) दहेरा है उसा पण हम दरिसण पाये फेर आगे उहां वन है । एक (१) उहां ऋषभ मुनि है । उसकी १० वरस की उमर भी है । एक महिना पछी आहार करत है । पांच घर की मर्याद कर आहार करत है । प्रासुक आहार करत है । लेकर आवत है फरे बन में जावत है । तिहां हम दरसण कुं वन में आय नै जीव हाथ पर रखी घर गये थे... सो दरिसण कि पुण्याई है....

तिहां से हम पीछे आये.... आगु हम चले । ३५० (साडे तीनसो) कोस पर गये तिहा जैनबद्री मूलबद्री दोय नगर आये । तिहां जैनबद्री मूलबद्री उंहा जैन का बडा उद्योत है जैनबद्री विषे बहुत दहेरा है, तिसका पण हम दरिसण पाये । जैनबद्री का राजा के दरबार में भंडार (ज्ञानभंडार) है, तिहां शास्त्र ताडपत्र उपर लिख्या छे, उहां जयधवल नामा ग्रंथ ६०,००० महाधवल ग्रंथ ७०,००० है, प्रतिधवल नामा ग्रंथ २८,००० है.... एसा शास्त्र वांचने समरथ नही है । शास्त्र है जिकारा दरिसण होत है । तिहां वन में एक प्रभोदचंद्र मुनि है, वो दिन पन्नरे पछे आहार लेते है । आहार ने अरथे नगर में आता है, जोगवाई वणै तो आहार सुजतो लेत है, नही तो वन में फेरा परा जाता है, हम तिसका (ते मुनिका) पण दरिसण पाये । एसी जात्रा महाविदेह समान है । इसा जैन का राजा-प्रजा सब ही करणाटक देश का है । जैनबद्री-मूलबद्री के विषे जैन का बहुत उद्योत है । चोथा आरा समान है..... एसी यात्रा हम किधी पीछे (पछी) हम नाव चढकर.. फिरकर घरे आविया ।

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

(7) श्री धर्मचंद्रजी की हस्तप्रति

१. प्रथम देश गुजरात मध्ये श्री अहमदाबाद नगर से ३०० कोस मुलतान है ।

२. मुलतान से १५० कोस लाहोर है ।

३. लाहोर से ३०० कोस खंधार है ।

४. खंधार से ९०० कोस इसफानगर है, वहाँ का बाजार १२ कोस लंबा है ।

५. इसफानगर से ६०० कोस खुरसान है, वहाँ का बाजार १५ कोस लंबा है ।

६. खुरासान से १२०० कोस इस्तंबुलनगर है, वहाँ का बाजार ३६ कोस लंबा और २४ कोस चौडा है । वहाँ रोमी बादशाह राज करते है जिनके पास २४ लाख घोडे, १ लाख २५ हजार हाथी और ३ लाख गुलाम है, ५ लाख वादी है, १ करोड २५ लाख सैनिक है । नगर की चारों तरफ कोट है, वह कोट तांबे का है ।

७. इस्तंबुल से १४०० कोस वच्चदेश है, वहाँ सफेद रेशम होते है । अत: मानव के रक्त में भी सफेदी प्राप्त होती है ।

८. वहाँ से ५० कोस दूर आकलनगर है ।

९. आकलनगर से ७०० कोस तारातंबोल है । वहाँ महाराज श्रीसूरचंदजी राज्य करते है । नगर का बाजार ४० कोस लंबा और ३६ कोस चौडा है । नगर की चारों तरफ तांबे का कोट है । कहीं पर रजत का कोट तो कही पर स्वर्ण का कोट भी है । वहाँ का राजा जैनधर्म का पालन करता है । नगर के मध्य में चौक है, वहां २ कोस के विस्तार में श्री आदिनाथजी का जिनालय है । जिनालय में स्वर्ण की दिवार है और जिनालय के भीतर रजत का कार्य किया हुआ है । खंभे स्वर्ण के है और प्रतिमा भी स्वर्ण की है । प्रतिमा ६ धनुष्य ऊँची और १०८३ मण की है ।वेदी स्वर्ण की है, संघासन जडाव का है । जिनालय के उपर ७०० मण का कलश है । जस जिनालय के आसपास अनेक जिनालय है, जिसमें तीन चौबीसी की प्रतिमा है । वहाँ त्रिकाल पूजा होती है । भगवान के सन्मुख स्नात्र आदि होते है । वहाँ साधु भी वीद्यमान है । राजा नित्य व्यख्यान श्रवण करता है । राजा भी साधु को आहार पानी बहोराकर ही भोजन करता है । इस प्रकार जैनधर्म वहाँ फैला हुआ है ।

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 12

तारातंबोल के पास सिंधु नदी विशाल विस्तार में बह रही है । अहमदाबाद नगर से तारातंबोल नगर के पास सिंधु नदी विशाल विस्तार में बह रही है । अहमदाबाद नगर से तारातंबोल नगर ५६५० कोस दूर है ।

(प्रतिलेखक परिचय - पं. धर्मचंद सं. १९०७ विद्वान का विशेष परचिय उपलब्ध नही है । प्रतिलेखन वर्ष - वि. सं. १९०७ स मिली चैत्र वदि ११ दिने, प्रत लिखे जाने का उल्लेख है । प्रतिलेखन स्थल - ग्राह सहसर मध्ये, प्रत परिचय - प्रत नं. ३७३३९, जो संपूर्ण है । प्रत में दो कृतिओं का आलेखन हुआ है । प्रत का माप - ३६ १२ से.मी. है । कुल पत्र संख्या २. प्रति पृष्ठ पंक्ति संख्या १०. प्रति पंक्ति अक्षर लगभग ३० है । अक्षर साधारण स्वच्छ है ।)

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

(8) गणिवर्य इश्वरविमलजी की हस्तप्रति

१. लाहोर से मुलतान १५० गाउ

२. वहाँ से ३०० गाउ खंधार

३. वहाँ से ९०० इसपन्न वहाँ तिलंगी बादशाह राज्य करता है ।

४. वहाँ से ७०० गाउ सामनगर

५. वहाँ से ८०० गाउ पर १२ कोस में विस्तृत खतानगर

६. वहाँ से ६०० गाउ पर १५ कोस में विस्तृत खुरासाण

७. वहाँ से २०० गाउ पर ७२ कोस का इस्तंबोल नगर । ४८ कोस के बाजारवाले इस नगर में रोमी राजा राज्य करता है । वह छट्ठे महीने में बाहर निकलता है । चौवीस लाख २४ कटक, ३ लाख गुलाम और ३ लोहे के कोट वहाँ है ।

८. वहाँ से ५०० गाउ बबरकोट

९. वहाँ से ७०० गाउ तारातंबोलनगर में राजा सूरचंद राज्य करता है । ४० कोस का नगर है, तांबे का कोट है । २४ कोस के बाजार में सुवर्ण जिनालय में रत्न की प्रतिमा है । वहाँ जैनधर्म विद्यमान है । यह बात क्षत्री बुलाखीदास जो मुलतान का वासी है, वह वहाँ जा कर आया है, उसने बताई है अतः लिखा है । वहाँ से समंदर करीब है । लाहोर से ६५० गाउ है । वहाँ जैनधर्म विद्यमान है । इति संपूर्ण

(मूल प्रत के प्रतिलेखक का परिचय - नाम - गणि श्री इसरविमल है । उनके द्वारा स्वहस्ते लिखी गई अन्य दो प्रति भी ज्ञानमनंदिर में विद्यमान है । जिसके नं. ९३७८ और १३५२७ है । यह दोनों भी सं. १७६२ में लिखी गई है । उसमें प्रस्तुत प्रत और १३७८ दोनों प्रत ब्रध्नपुर में दो-तीन दिन के अंतर में लिखी गई है । अपभ्रंश ईसरविमल के साथ अन्य प्रत में शुद्ध नाम इश्वरविमल भी प्राप्त है ।

प्रतिलेखन वर्ष - वि.सं. १७६२ पोस सुदि पंचमी तीथी रविवार १ प्रतिलेखन स्थल - ब्रध्नपुर । प्रत परिचय - प्रत नं. ९९० जो संपूर्ण है, प्रत में कुल ४ कृतिओं का संकलन है । यह कृति बाद में लिखी गई है । प्रत का माप - २५ १२ से.मी. है । कुल पात्र संख्या २७, अक्षर वाच्य है ।)

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 13

(9) जैन मुनि (आगलोड) की हस्तप्रति

संवत् १६८३ वर्ष में बादशाह शिहायान राजा हुए । तत्पश्चात् मुलतानवासी ठाकुर बुलाकी के मुख से शांभली दूरदेशांतर से आए, उन्होंने यह लिखवाया।

१. श्री अहमदाबाद से ३२५ कोस दूर आगरा है ।

२. वहाँ से ३०० कोस लाहोर

३. वहाँ से १५० कोस मुलतान

४. वहाँ से ३०० कोस खंधार

५. वहाँ से ९०० कोस इसपांनगर वहाँ तिलंगी बादशाह राज्य करता है ।

६. वहाँ से ७०० कोस सांमनगर

७. वहाँ से ८०० कोस खासतानगर, वह नगर बारह कोस में विस्तृत है ।

८. वहाँ से ६०० कोस खुरासाणनर है, वह नगर १५ कोस में विस्तृत है । उस नगर की सीमा ४८ कोस प्रमाण विस्तृत है । वहाँ रोमी बादशाह राज्य करता है । वह छः माह बाहर निकलता है । उस बादशाह को २४०००० करक है, ३००००० गुलाम है । वहाँ लोहे का कोट बनाया हुआ है । वहाँ से,

९, ५०० कोस पर बबकोट देश है । वहाँ के मानव का लहु हीर रंग का है । वहाँ से तारातंबोलनगर है, जहाँ सूरचंदराजा राज्य करते है । वह नगर ४० कोस के विस्तार में है । वहाँ पश्चिम में समंदर किनारा है । वहाँ जैन धर्म के अनेक प्रासाद है, पौषधशाळा, स्तम्भ आदि जैनधर्म से प्रभावित पृथ्वी है । साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका है । वहाँ जैनधर्म विशाल अवस्था में फैला हुआ है । वहाँ ततोदयप्रभसूरि (उदयप्रभसूरि) नामक आचार्य है । वहाँ सर्व जैन ही है, फिर अधिक परमेश्वर की जानते है । ९० वर्ष का भोजक वहाँ गया था. वह ८० वर्ष तक तब दूर देशांतर घूमते - फिरते वृद्ध हुआ तब ९० वर्ष का हुआ तब यहाँ आ कर समस्त बातें लिखता रहा है, वह सही है ।

(प्रतिलेखन पृष्पिका - संवत १७८५ वर्ष में माह सुदि ९ शुक्रवार के दिन आगलोड मध्ये लिखा गया है । शुभं भवतु:)

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

(प्रतिलेखक परिचय - प्रतिलेखक विद्वान का नाम उपलब्ध नही। प्रतिलेखन वर्ष विक्रम संवत १७८५ वर्ष में माह सुदि ९ शुक्रवार के दिन प्रति लिखे जाने का उल्लेख है। प्रतिलेखन स्थल - आगलोड मध्ये प्रति परिचय - प्रत नं. २८५५३, जो संपूर्ण। प्रत में तीन कृतिओं का संकलन है। प्रत का माप २१ १२ से.मी. है। कुल पत्र संख्या ९. पंक्ति संख्या १७. प्रति पंक्ति अक्षर लगभग ३२ है। अक्षर उत्तम वाच्य है।)

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 14

(10) कालुचा राघवदास की हस्तप्रति

संवत १६८४ वर्षे महा सुदि १३ पातस्याहसाहजहाँ राज्य कर रहे है वह पीछली वार्ता है। मुलतान का वासी जाते क्षत्री नामे ठाकुर बलाखी वह दूर देशांतर देखकर आया. उसने जो बताया वह लिख रहा हूँ।

१. प्रथम गुजरात मध्ये श्री अहमदाबाद से ३०० कोस आगरा है, वहाँ से

२. ३२०० कोस लाहोर, वहाँ से

३. १५० कोस मुलतान, वहाँ से

४. ३०० कोस खंधारि, वहाँ से

५. ९०० कोस इसपन्ननगर है। वहाँ तिलंग बादशाह राय कर रहा है। वहाँ का बाजार १२ कोस लंबा है। वहाँ से

६. ६०० कोस खुरसाण है। वहाँ का बाजारा १५ कोस लंबा है। वहाँ से

७. १२०० कोस अस्तंतंबोल नगर है। वह नगर ३६ कोस लंबा है, २४ कोस चौडा है। बाजार २४ कोस लंबा है। वहाँ रुमि बादशाह राज करता है। वह छट्ठे माह में बाहर निकलता है। उस बादशाह के पास २४ लाख घोडे, १२ लाख हाथी है। ३ लाख गुलाम है, ५ लाख बांदी है १ कोडी २५ लाख पायदल है। नगर के आसपास चारों तरफ लोहे का कोट है। बादशाही कोट तांबे का है। वहाँ से

८. ५०० कोस बबर देश है। वहाँ सफेद हीर मानव के लहू में रंगा हुआ है। वह देश विशाल है, ५०० कोस लंबा है। वहाँ से

९. ७०० कोस तारातंबोल नगर है। वैताढ्य के विद्याधर का वास है। वहाँ राजाधिराज राजा महाराजा श्री सूरचंद राजा विद्यमान है। वह नगर ४६ कोस लंबा है, ३६ कोस चौडा है। ४८ कोस का लंबा बाजार है। नगर के आसपास चारों तरफ तांबे का कोट है। राजा के आसपास अष्टधातु का कोट है। वहाँ राजा जैन धर्म का पालन करता है। वहाँ सर्व भाषित धर्म है . वहाँ जैन के ७०० शिखरबद्ध जिनालय है। यह जिनालय बाजार में पंक्तिबद्ध दोनों तरफ है। बडा चौक है। चौक के मध्य में श्री आदिनाथजी का जिनालय है। दो कोस में विस्त वह जिनालय है। जिनालय में स्वर्ण की पीठिका है। उपरी कार्य रजत का है और खंभे स्वर्ण के है। प्रतिमा स्वर्ण की है। प्रतिमा काउसग्ग मुद्रा में है। प्रतिमा १०८ धनुष ऊँची है। बिंदी स्वर्ण

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

की है । सिंहासन जडाव का है । जिनालय के आसपास ७२ चैत्यालय है । तेल पूजा होती है . वहाँ तीन चौबीसी की प्रतिमा है । वहाँ त्रिकाल पूजा होती है । महामुनिश्वर दिगंतर सदा सर्वदा बिरजामान है । राजा नित्य प्रात: काल में जिनालय में आ कर जिनवाणी श्रवण करके, पूजा करके, मुनिश्वर को आहार दान दे कर ही भोजन करते है । वहाँ मात्र जैनधर्म की माहिमा है, अन्य किसीका नही । इस प्रकार जैनधर्म सर्वदा विद्यमान है । तारातंबोल नगर के आसपास विशाल सिंधु नदी बहती है । उस नदी का विस्तार विशाल है । यह बातें मुलतान के वासी ठाकुर बुलाखी ने बताई है । अहमदाबाद से तारातंबोल गये तब ५६०० कोस है यह कागज आगरा से लिखा हुआ मिला हैष वह देखकर लिखा गया है । पूर्व में भी इस बात की पुष्टि हेतु उदेपुर के वासी हुंबड ज्ञातीय कालुचा राघवदास काबिल गया था, उसने भी यदी बात सुनी थी । इति वार्ता संपन्न ।

(प्रतिलेखक परिचय - कालुचा राघवदास (हुंबड ज्ञातीय) । प्रतिलेखन वर्ष - विक्रम १९ अनुमानित । प्रतिलेखन स्थल - उपलब्ध नहीं है । प्रत परिचय - प्रत नं. २८२८२ जो संपूर्ण है । प्रत में ९ कृतिओं का संकलन है । प्रति का माप २८.५ १२ से.मी. है । कुल पत्र संख्या ७. पंक्ति संख्या १९-२० प्रति पंक्ति लगभग ३७-४० अक्षर है । प्रत दशा पानी से विवर्ण है और अक्षरों की स्याही फैल चूकी है । अत: कुछ शब्द दुर्वाच्य है । वास्तविकता के करीब जाने का पूर्ण प्रयास किया गया है । अवाच्य अक्षरों - वाक्यों को ब्रेकेट में प्रश्नर्थ के साथ रखा गया है । जो योग्य करके भी पढे ।

उपरोक्त लेखवाली प्रत कोबा - आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर में सुरक्षित है । उपरोक्त लेख जो एतिहासिक है और संशोधन - संपादन करनेवाले विद्वानों को अत्यंत उपयोगी माहिती पूर्ण करने हेतु सहायभूत हो, इसी आशय से यहां प्रगट किए गए है ।

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 15

(11) तारातंबोल नगरी की प्राचीन चिट्ठी

संग्राहक - मुनिराज श्री कांतिसागरजी

स्वरित श्रीगाम अहमदाबाद महाशुभस्थानके पूज्य श्री५ श्री अनेक सर्वे ओपमा लायक तीथरुप भाई रतनचंद, एतान श्री हेदराबाद से लिखी भाई पदमसी का प्रणाम पढे । हम हमारे परिवार सहित दूर देशांतर से यात्रा करने हेतु सं. १८०५ की साल में गये थे । उसकी हकीकत प्रथम श्री अहमदाबाद से ४८०० श्री तारातंबोल नगर है, उसकी विगत बताते है ।

१. प्रथम श्री अहमदाबाद से ३०० कोस आगरा शहर है,

२. वहाँ से ३०० कोस श्री लाहोर शहर है,

३. वहाँ से १५० कोस श्री मुलतान शहर है,

४. वहाँ से ३५० कोस बंदर शहर है,

५. वहाँ से ९०० कोस श्री आशापुरी नगरी है । उसका बाजार १२ कोस का है ।

६. वहाँ से ७०० कोस जाने पर श्री तातंबोल शहर है । उसकी हकीकत बताते है । श्री मुकुटस्वामी की मूर्ति है । वह मूर्ति पबासण पर बिना आधार करे है । व मुकुटस्वामी की मूर्ति २८ हाथ चौडी है, उसकी ऊंचाई ३८ हाथ है और उसके पग के अंगुठे पर २८ नंग श्रीफल रहते है । वहाँ की यात्रा करके हम आगे बढे ।

७. वहाँ से ६०० कोस आगे जाने पर १ बडा तालाब है । जिसके मध्य श्री अजितनाथजी का जिनालय है । वहाँ हम नाँव में बैठकर दर्शन करने हेतु गये थे । वहाँ श्री अजितनाथजी की प्रतिमा ६ हाथ चौडी और १० हाथ ऊँची है । वहाँ की यात्रा करके हम आगे बढे ।

८. वहाँ से ५०० कोस आगे तलंगपुर नगर है । वह नगर ५० कोस का है । वहाँ २८ जिनप्रसाद है । वहाँ से आगे श्री चंद्रप्रभजी का बडा जिनालय है । उसमें १२८ जिनप्रतिमा है । वहाँ दर्शन करके हम आगे बढें ।

९. वहाँ से ७०० कोस आगे श्री नवापुरी पाटण नामक शहर है ।

१० वहाँ से ३०० कोस आगे दूसरा बडा तारातंबोलनगर है । वह देखनेलायक है । उस नगर का कोट ४०० कोस का है । उस नगर का कोट तांबे का है । वहाँ के राजा का महेल सफेद धातु का है । राजा का नाम धीरसेन महाराजा स्वर्ण रजत रत्न

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

आदि सब का व्यापार करते है । सब व्यापारी अपनी दुकान खुली रखकर ही अपने घर जाते है । किन्तु कोई किसीकी चीज कभी नहीं लेता । इस प्रकार सभी लोग अत्यंत धर्मी है । उस नगर का बाजारा ६० कोस का है । उस नगर के मध्य में ७०० श्री जिनप्रासाद है । वहाँ राजाप्रजा सभी जैनधर्मी है । वह लोग जैन के सिवाय अन्य किसी भी देव को नहीं मानते । प्रतिमाओं की गणना इस प्रकार है : श्री जैन प्रतिमा १५००० पाषाण की है, ४००० हरे माणेक की है । उसमें ३४८६ प्रतिमा धातु की है । ११९० प्रतिमा सरवणी रत्न की है । १६ प्रतिमा बावना चंदन की है और १११ प्रतिमा गोरुचंदन की है । ९ प्रतिमा माणक की १ अंगुल प्रमाण है और ५४५ प्रतिमा लाल रत्न की है । ४८७ प्रतिमा काले रत्न की है । और १ प्रतिमा मोती की है । ४ प्रतिमा लाल रत्न की १ अंगुल प्रमाण है, ४ प्रतिमा हीरे की है, ५ प्रतिमा लसणीया की १ अंगुल प्रमाण है । कुल मिलकर २४७६४ प्रतिमा है । वहाँ राजा का चौक है और चौक के मध्य श्री रिखवदेवजी का जिनालय है । उसकी ऊंचाई ४ कोस है । वहाँ १-१ मंडप है । चार दिशा मिलकर कुल ३६ मंडप है । जिनप्रासाद का कोट तांबे का है और कोट के खंभे रजत के है । गंभारे में स्वर्ण के खंभे है और प्रसाद संधासन स्वर्ण के है तथा जडाव के है । संघासण पर ३ चौबीसी की प्रतिमा है । उन प्रतिमाओं का वर्ण अलग-अलग है । सफेद, हरा और श्याम इस प्रकार अलग अलग वर्ण है ।

वहाँ का राजा प्रात:काल में पूजा करता है । वह राजा अत्यंत गुणी है और जैनधर्मी है, और समतावान, शीलवान, जशवंत, गुणवंत, विनयवंत है । सर्व गुणकारी बिराजमान है । उस नगर में हम ४२ दिन रहे और भी अनेक उत्तम जिनालय है । उन जिनालयों में प्रतिमा स्वर्ण की और जडाव की है । ३२ प्रतिमा है । वहाँ अन्य प्रतिमा १०५ है वहफटकरतन की है । उन प्रतिमाओं के दर्शन किये है । उस नगर के मध्य श्रावक महाकुटुंबी और महाधर्मी है । तप-जप में सर्व पूर्ण है । उस जिनालय के भंडार में ९० कोड का द्रव्य है । उस जिनालय के भंडार में जवला गवला और अन्य गवला के ग्रंथ है । उन ग्रंथों के श्लोक १०४००० है । और अन्य ग्रंथों के १०८००० श्लोक है । वह ताडपत्र पर लिखे गये है । उन्हें कोई भी पंडित पढ नही सकते । उस नगर में वन मध्ये श्री शांतिनाथजी का जिनालय है । उस नगर के मध्य में सर्प, बिच्छु, शेर का भय अधिक है । वहाँ से आगे जाने पर श्री रिखवदेवजी

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 16

और नेमजी नाम साधुजी रहते है । हम गये तब उनकी उम्र ९० वर्ष थी । वह मुनि शाम के पूर्व आहार ग्रहण करने हेतु निकलते है । आहार प्राप्त होता है, तो ग्रहण करते है अन्यथा नही लेते । उनके दर्शन हुए है । वहाँ से ६५ कोस आगे गंगानगर है । उस नगर के वन मध्ये श्री रिखवदेवजी का जिनालय है । उसमें श्री प्रभाचंद्रजी नामक साधु रहते है । जो १ मास में दो बार ही पारणा करते है । वह जोगवाई का आहार मिलने पर ही लेते है अन्यथा दूसरे माह पर ग्रहण करते है । ऐसे मुनिराज के दर्शन हुए है । वहाँ से आगे जा रहे थे, तभी साधुजी ने हमें कहा कि, आगे मत जाना, यहाँ से ३०० कोस जाने पर एक टांगरो मुलक है । यह हकीकत में श्री प्रभाचंद्रजी ने कही अत: हम सं. १८२१ की साल में सर्व जात्रा करके १६ वर्ष के बाद कुशलक्षेम घर आ गये है । इस प्रकार हमें मोक्षगामी के दर्शन हुए है । यह कागज संपूर्ण लिखा है ।

(नोट : उपरोक्त पत्र की नकल मेरे पास पुरानी भाषा में और बालबोध लिपि में लिखित है । और वह लगभग ९०० वर्ष की लिखी हुई प्रतीत हो रही है ।

इस पत्र में जो भी विगत दी गई है, वह तमाम अत्यंत विचारणीय है । किसी स्थान पर श्री ऋषभदेव भगवान का प्रासाद ४ कोस ऊंचा लिखा गया है । अत: कोस का निश्चित अर्थ क्या करना, यह समझ नहीं सकते । ऐतिहासिक दृष्टि से भी इसका क्या मूल्य हो सकता है, वह देखना है । फिर भी यह पत्र भाषा की दृष्टि से या अन्य किस दृष्टि से विद्वानों को उपयोगी होगा, यह सोचकर यहाँ प्रकाशित किया गया है । उसकी सत्यासत्य हकीकत पर वाचक वर्ग विचार करे और इतिहास के अभ्यासी भी इससे संबंधित कोई सत्य खोजे यही आशा है ।)

(जैन सत्यप्रकाश वर्ष-४ अंक-३)

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

(12) तारातंबोलविषयक उल्लेख

संग्राहक श्रीयुत् सागरमलजी कोठारी

कुछ मास पूर्व श्री जैन सत्यप्रकाश मे तारातंबोलनगर विषयक पत्र प्रगट हुए थे। उस समय कहा गया था कि अगर अन्य किसी ग्रंथ में इस घटना से संबधित साहित्य हो, तो प्रकाश में लाया जावें ताकि इस संबंध की एतिहासिक खौज की जाए। इस पर से एक यतिजी द्वारा अपने संग्रह ग्रंथ में जिसमें उन्होंने बिहारी सतसई, कोकशास्त्र, कविता, वैद्यक शास्त्र, ज्योतिष, मंत्र, तंत्र आदि अनेक विषयों के साथ कई एतिहासिक बातों का भी उल्लेख किया, उसी हस्तलिखित नोंध कोपी को देखते हुए यह प्रवास वर्णन मिला जो कि उपरोक्त लेख सदृश होने से प्रकाशनार्थ भेजा है। उक्त कोपी १७वी शताब्दी की होने का अंदाज किया जाता है, पत्र इस प्रकार है।

संवत् १६८६ वर्षे पातिसाहसाहिज्यां राज्य करते है, वहाँ की वार्ता है। मुलतान वासी, जाति खत्री, नीम ठाकुर विद्यालय, दूर देशांतर से आया, वह वार्ता कहते है। गुजरात देश मध्ये अहमदाबाद नगर से ३२५ आगरा, वहाँ से ३०० कोस लाहौर, वहाँ से १५० मुलतान, वहाँ से ३०० खंधार, वहाँ से ७०० सांम नगर है, वहाँ से ८०० सासता नगर बारह कोस विस्तृत है, वहाँ से ६०० खुरसान शहर १५ कोस विस्तृत है, वहाँ से १२०० तारातंबोलनगर ७२ कोस विस्तृत है। नगर का बाजार ४८ कोस में विस्तृत है। वहाँ रोमी बादशाह राज्य करता है। वह छ: माह में बाहर आता है। उसके २४ लाख कटक है, ३ लाख गुलाम है, लोहे का कोट है, वहाँ से ५००, कोस बबर देश है। वहाँ हिर रंगाई, सूरचंद राजा राज्य करता है। वह नगर ४० कोस विस्तृत है, वहाँ समंदर का किनारा है, जैनधर्म है, अद्भूत प्रासाद अनेक है।

इति... (जैन सत्य प्रकाश वर्ष ६, अंक-६)

(नोट: उपरोक्त छ लेख में बताये गये स्थान - अंतर दर्शानेवाला कोष्टक निम्नोक्त है। उसमें चार लेखमें अहमदाबाद से और प्रत नं. ९९० में लाहोर से इस प्रकार अलग-अलग रूट में शहर और अंतर बताये गये है। शहरों के क्रम भी बदले हुए है। प्रतों में जिन प्राचीन नगरीयों के नाम है वह वर्तमान में किस नाम से पहचाने जाते है, कहाँ स्थित है उसकी विगत उपलब्ध नही है, और प्रतों में नगरीयों के अंतर कोस और गाठ लिखे है उसका क्या माप समझना, यह भी शोध-संशोधन का विषय है। वाचकवर्ग यह ध्यान रखे। इस नगरी के विषय में अन्य भी कोई हकीकत किसीके ध्यान में हो तो भेजने की कृपा करें।)

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 17

(13) हिमालय के उस पार....

चौदह राजलोक के ठीक मध्यभाग में अत्यंत यौवन-सभर एसा मध्यलोक (तिच्छालोक) आया हुआ है... और इस मध्यलोक के ठीक बीचोबीच दीपक की चिरंजीव रोशनी के समान केसरिया रंगनुमा एक महाद्वीप आया हुआ है, यह विस्तार में १,००,००० योजन बडा है। जंबू नाम के वृक्ष को लेकर इसका नाम जंबुद्वीप है। अपने जिस देश में रहते है, इसका प्राचीन नाम भरतक्षेत्र है। जंबुद्वीप के ठीक दक्षिण भाग में यह आया हुआ है। आज भी उसे भारत एसा पवित्रकर नाम से पहचानने में आता है। ५२३ योजन से अधिक इसकी चोडाई है और लंम्बाई तो कई हजारो योजन में विस्तरित है।

भरत क्षेत्र के मध्य में २५ योजन ऊँचाईवाला और योजन की लम्बईवाला वैताढय नाम की एक पर्वतमाला भावसमाधि लगाकर अडग रुप में स्थित है। यह पर्वतश्रेणी पूर्व से पश्चिम समुद्र तक फैली हुई है। उसके उपर अनेक देश एवं गगनचुंबी एसी दिप्तिमान अति मनभावन नगर बसे हुए है। स्वप्न तरंग समान इसका प्राकृतिक सौंदर्य मानो कुदरत द्वारा प्रदत भैंट है। इस पर्वतमाला से भरतक्षेत्र के उत्तर और दक्षिण दो विभाग बनते है। अपने इसके दक्षिण छोरवाले विभाग में रहते है।

लवण समुद्र मे पूरवेग से हिलौरे लेता जल अपने पवित्र देश के पैर धोता है। आज भी एशिया, युरोप एवं अमेरिकादि की सर्व शोभा को धारण करनेवाली धरा... उत्तरध्रुव से दक्षिणध्रुव तक भरतक्षेत्र का ही एक भाग है..... इसिलिए ही अभी तक पृथ्वी का अधिकतर भाग अपने लिए अदृश्य ही रहा हुआ है।

जैनशासन के अनुसार उत्तर और दक्षिण भरतक्षेत्र के दोनो भागो मे ३२,००० देश आये हुए है। इन ३२,००० देशों का उल्लेख कुछ इस प्रकार से है। २८ पुरुष - ३२ स्त्री - ६० जन का १ कुटुंब, एसे १०,००० कुटुंब - १ (गामति - दसकुलसाहस्त्रिको ग्राम: - ज्ञाताधर्मकथा ग्रंथ) और एसे १२,००० ग्राम - १ देश होता है। अर्थात् १ ग्राम में ६०-१०,००० - ६ लाख स्त्री-पुरुष.... तो १ देश की

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

(14) मुनिश्री शीलविजयजी का वृत्तांत प. पू. मु.

उत्तर दिशा की तीर्थमाला

उत्तर दिशि ओपे सदा, जैनराज अशेष :
महानगर रुडा घणां, सुणजो तेह विशेष । १
दुर्गम पंच उल्लंघता, नदी नगर पाषाण:
मलेच्छ राज्य पण छे ईहां, कहिस्युं ताश वखाण । २

उत्तर दिशा समग्र जैन राज से सदा शोभती है । उस दिशामें बहोत अच्छे और बडे बडे नगर है । जिनका विशेष रुप से वर्णन सुनीये । वहां मलेच्छ राज्य भी बडे बडे है, उनकी बाते भी होगी वो भी जानिये । १-२

चोपाई

दिल्लीपति हुओ अकबरशाह, षटदर्शन खोजी पातशाह,
दानदया दीपावी जीणे, धर्म परीक्षा कीधी तिणे. ॥ ३ ॥
एक दिवस नृप सभा मझार, भणे विप्र ते धर्मविचार:
श्रावक जीव-दयाए रमे, पण सूर्यने ते नवि नमे । ॥ ४ ॥
चंदु झवेरी बुद्धिनिधान, श्रावक धर्मी तास प्रधान:
मिथ्यामति मोडी जयवाद, वरीओ भुप सभा संवाद । ॥ ५ ॥
सूर्यदेव ने गंगानदी, जिनमतमांही उत्तम वदी,
मिथ्यामति ते राते जिमे, मेलभर्या गंगामाही भमे ॥ ६ ॥
माटी जल जलाण ने वाय, वणस्शई जीव असंख्या थाय,
कंद मूळना भेद कहाय, वली अनंता कहे जिनराय. ॥ ७ ॥
ते ओळखाव्या उपनयन धरी, गोप छे देववासे करी:
विप्रतणुं उतार्यु मान, जिनशासननुं वाल्युं वान. ॥ ८ ॥
पातशाह परशंस्या जैन, चिरधर्मी पोते लयलीन,
जेहनो वंश विराजे आज, सर्वे वश कीधा जेणे राज. ॥ ९ ॥

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 18

दील्ली में अकबर बादशाह हुए । वह खटदर्शन तत्व के शोधक थे । उनहोने दान और दया को प्रजापति किया था और धर्म की परीक्षा की थी । एक दिन उनकी सभा में एक ब्राह्मणने धर्म संबंधी विचार रखा, उसने कहा की श्रावक जीवदया में रहते है जीवदया का पालन करते है लेकिन सूर्य को नमस्कार नही करते । वहाँ धर्म में प्रधान और बूद्धिशाळी वैसा चंदु नाम का झवेरी वहाँ बैठा था । उसने राज सभामें मिथ्यामति ब्राह्मण के साथ वाद किया और उसका मान तोड के विजय प्राप्त किया । उसने कहा कि जैनी सूर्य को गंगा जैसे मानते है , और कोई इतना नही मानता । जैन लोग सूर्यदेव की साक्षी में ही खाना खाते है । सूर्य के अस्त होते ही रात को खाना छोड देते है । कीतना ज्यादा बहुमान करते है सूर्य का । मिथ्यात्वी लोग गंगा को मानने का दिखावा ही करते है और कैसे भी मलिन अवस्था में गंगा में घुमते है (जैनी वैसा नही करते) यह ध्यान में रखना चाहीये की मीट्टी, जल, अग्नि, वायु का आघात करने से असख्यांत जीवो का नाश होता है । और जमीन वादके भेद समझा के कहा की उसके भक्षण से अनंता जीवो का विनाश होता है । यहाँ चंदु झवेरीने उपनयनपूर्वक गाय की पूंछ में भी देवता का वास है यह सब हकीकते समजाई और ईस प्रकार ब्राह्मण का मान उतार के जिनशासन की प्रभावना की । बादशाहने जैन धर्म की प्रशंसा की और खुद धर्ममें स्थिर हुआ । कवि कहते है कि उस राजाका देश आज भी विद्यमान है । उसने सभी सत्यो को अपने वश में किया था ।

एवु दिल्ली नगर मंडाण, दोय जोयण विस्तारे जाणु,
छ जोयण सोहे आगरु, नदी यमुना कंठे गुण भर्यु । ॥ १० ॥
गंगा तीरे छे केदार, कुरुक्षेत्र ने वणी हरद्वार
ए तीरथ शिवना छे सही, (एनी वार्ता हेली कही) ॥ ११ ॥
नगर कोट माहि ज्वालामुखी, देवी दर्शणे सोहे सुखी,
नकटी राणीनुं तिह राज, सो जोयण उपरे ते आज ॥ १२ ॥
हिंगलाज हिमालयगिरि, देवी दीपे महिमा भरी,
त्रणसय कोसे लाहुर गाम, नवलख क्षत्री वेस तस ठाम ॥ १३ ॥

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

दिल्ली नगर दो योजन विस्तार वाला है । छह योजन का आग्रा शहर है, यह नगर यमुना नदी के किनारे बसा हुआ है । अतो गंगा के किनारे केदारनाथ है, कुरुक्षेत्र, हरिद्वार आदि तीर्थ है । नगरकोटमें ज्वालामुखी देवी है, जिनके दर्शन से लोग सुखी होते है, वहाँ नकटी रानी का राज्य है, सौ योजन तक यह राज्य फैला हुआ है । हिमालय गिरि में महिमावंत हिंगलाज देवी शोभायमान है । वहाँ से तीनसो कोस उपर लाहोर शहर है । यहाँ नौ लाख क्षत्रियो की बसती है ।

इहां सो पंचासे जाणु, पुर मुलतान महा-मंडाण,
काबुलथी करे राज्य पठाण, नवलख नेजानु दळ जाण ॥ १४ ॥
त्रणसो कोसे नयर खंधार, सवालाख नामे गिरि सार,
कालिजर नत्रथी निसरी, यमुना नदी गंगा माही वरी. ॥ १५ ॥
एक मास पंथ ने उपरे, मेढा वाहन तिहां संचरे,
मृग कस्तुरी हाथी घणा, सेर प्रमाण हरडे फूल गुणा ॥ १६ ॥
मानसरोवर त्यां कहेवाय, सो जोजननी गंगा त्यांय:
इहांथी नवसो गाउ मिळी, इसपदन नयर अ छे ते वळी ॥ १७ ॥

लाख नेजा का लश्कर है, यहाँ से तीनसो कोंस आगे खंधार (कंदहार नगर) हे । यहां सवालाख नाम का उत्तम गिरि है, कालिंजर पर्वत से निकलकर यमुना नदी गंगा में मिलती है । उसके आगे एक मास का पंथ है और वहाँ मेढा (घेटा) के वाहन से जाना होता है । कस्तुरी मृग, हाथी और बहुतसारे गुणवाली सेर सेर वजन की हरडे जहां पेदा होती है वह प्रदेश आता है । सुप्रसिद्ध मानसरोवर यहाँ है, सो जोजन की गंगा यहा है, यहा नौसो गाउ उपर इस्पहान नगर आता हे । १४.१७

काशमीर नामे पातशाह, बार लाख तणो निर्वाह,
त्यांथी पुरवदिसीमाहे वसे, रोमनगर अति उल्हसे ॥ १८ ॥
राज करे बारे सुलतान, ते पण जित्या विमल प्रधान:
अहिसे कोसे शासतानगर, त्रण जोजन विस्तारे सभंर ॥ १९ ॥
छे दल तिहां, लाख अढार सैन्य करी इहां
त्यागी तिहां हुओ मोटो मलक,छोडी सोलसो नारी थयो अलक ॥ २० ॥

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 19

खुरासाण पटशत उपर हुं नशान तिहां राजा सिरे,
इक्षु गज ने नागरवेल, तिहां वली न होये चोथी केल ॥ २१ ॥
बारस कोस इस्तंबोल, जोजन अढार वसे रंगरोल,
तिलंगशाह नामे पातशाह चोवीश लाख तुरंग उच्छाह, ॥ २२ ॥

यहाँ काश्मीरनामक देश में वहाँ का बादशाह रहता है । जिसकी बारह लाख की उपज है । वहाँ से पूर्व दिशा में रोमनगर है । वहाँ बारह सुलतान राज्य कर रहे है । इन सब को भी विमल मंत्रीने जिता था । आठसो कोस पर शासता नगर है, जिसका तीन जोजन का विस्तार है । वहाँ बलख बुखारा नाम का प्रदेश है और अठारह लाख हाथीओ का सैन्य है । यहाँ का राजा सोलहसो रानीयों और बडा मुलक छोड के त्यागी हुआ । छह सो गाउ उपर खुरासना है, वहाँ हुनसान राजा राज्य करता है, इस देश मे हुए हाथी, नागरवेल, केल - यह चार चीजे नही होती । बारहसो कोस उपर इस्तंबल नगर है । वहाँ से अठारह जोजन उपर तुरंगशाह नाम के बादशाह राज्य करता है । ईस राजा के पास चौबीस लाख तुरंगो का सैन्य है ।

बबरकुल वसे पांचसे, यवनराज इहां सुधी वसे,
मनुजर धीरे रंगे ते ही, नर महीमाए करे ते कीर ॥ २३ ॥
सहसमुखी हवे कहीए गंग, जोजन सवासो पहोली चंग,
अष्टापद रक्षाने काज, पहिली आणी जहुनु राज ॥ २४ ॥
तिहांथी पूर्व दिशे छे बौद्ध, छ दर्शनमहीं कह्या अशुद्ध,
देश देपाल नेपाल भुतान, पछे गुरखा ने कलिंग ते जाण ॥ २५ ॥
देउल महिमा मोटा घणा हस्ती भव् आचारे सुणया,
कौतुककाठी वानरराज, अश्वमुखा छे आगलआज ॥ २६ ॥

यहाँ से पांचसो गाउ दूर बबरकुल है । यवन राजाओं का राज्य वहाँ तक है, यहाँ मनुष्य के लहु से हीर को रंगा जाता है, और शक्ति से मनुष्य का तोता बनाने की विद्या जानते है । अब सहमुखी गंगा की बात जानते है । यह मनोहर गंगा सवासो योजन चौडी है । उसे अष्टापद की रक्षा हेतु पहले जन्हुकुमार (सगरचक्रीके पुत्र) लाये थे । वहाँ से पूर्व दिशा में बौद्ध रहते है, जो छह अशुद्ध दर्शन के गिने

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

जाते है । उसके बाद देपाल-नेपाल और भूतान देश आते है । यहाँ गुरखें और कलिंग रहते है । यहाँ देवल बडे महिमा वाले होते है, और बडे हाथीओं का भक्षण करनेवाले लोग यहाँ बसते है एसा सुना है । यहाँ के वानर कौतुक वेत है, यहाँ से आगे अश्वमुख लोग बसते है, सहस्त्रमुखी गंगा की दुसरी पार उदार जैन राज्य है, वो सातसो कोस आगे जाये फीर चालीस कोस विस्तार में है । लाट देश में तारातंबोल नगरी है, वहाँ जैन धर्मी मनुष्य किल्लोल कर रहे है, वहाँ जिनमति एसा सूरचंद्र राजा राज्य करता है, जिसकी तीन लाख की सेना है, भय झरते प्रोढ एसे पांचसो हाथी है । अनोपचंद और त्रिलोकचंद नामक दो पुत्र है और बुद्धिका सागर एसा सदानंद नामक जैन धर्मी मंत्री विद्यमान है और पाँचसो तुरंगम वहाँ है - एसी राजलक्ष्मी उसके वहाँ है ।

जिनमंदिर सोहे सायसात, कहीए तेहना सुणा अवदात,
त्रण काळ पूजा करे जिनमति, नाच नेवैद्य अने आरती ॥ ३१ ॥
संघतणी करे भक्ति रसाळ, आगम अर्चा झाकझमाळ,
सुवि हित सादु अ छे तिहां घणा, वनवासी रहे रळियामणा, ॥ ३२ ॥
युग प्रधान यतीश्वर जाण, जिनवल्लभसुरि गुणनी खाण,
दानी ज्ञानी बहु धनवंत, श्रावकजन तिहां वसे सतवत ॥ ३३ ॥
व्रत पाळे बारे मन खरे, जिनशासननी शोभा करे,
संघ प्रतिष्ठा गुरुनी भक्ति, दिन दिन दीपे बहुळी युक्ति ॥ ३४ ॥
त्रणस्य शिवालय सोहा-मणा, मिथ्यात्वी जन माने घणा,
वर्ते जीवदया नित्यमेव, आकरा कर न करे, नरदेव. ॥ ३५ ॥
जिनधर्मी चारे वळी वर्ण, न्यायवंत पृथ्वी आभर्ण,
एम एनेक शोभा मंडाण, केता कहीए नगर वखाण. ॥ ३६ ॥

यहाँ सातसो जिनमंदिर शोभायमान है जिनका वर्णन सुनो । जैनधर्मी उन मंदिरो मे नाच, नैवेद्य, आरती आदि से त्रिकाल पूजन करते है । संघ की उत्तम भक्ति व आगम की चर्चा होती है, सुविहित साधु भी यहाँ बहोत है जो प्राय: वनवासी है । उन साधुओं में युगप्रधान यतीश्वर श्री जिन वल्लभसूरिजी गुण की खाण समान

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 20

मुख्य है । सत्य बोलने वाले श्रावक बसते है, जो ज्ञानी और धनवान है । जो सच्चे मन से बारह व्रत पालते है और जिनशासनकी शोभा बढाते है, संघ की प्रतिष्ठा गुरु की प्रतिदिन युक्तिपूर्वक तरह तरह की भक्ति करते है ।

यहाँ तीनसो शिवालय है उन्हे मिथ्यात्वी लोग बहोत मानते है । यहाँ हमेशा जीवदया का प्रवर्तन है, राजा दयालु है इसलिए प्रजा के उपर कठीन कर नही डालता । यहाँ जैन धर्म का पालन करनेवाले चार वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और क्षुद्र) लोग है । वो सब न्यायवंत और पृथ्वी के आभूषण समान है । एसी अनेक शोभा से युक्त यह देश है । उसकी जितनी तारीफ करे कम है । ३१-३६

इहांथी गाउ सो उपरे, सुवर्णक्रांति नगरी सिरे,
कल्याणसेन नामे भूपाल, जिनमति जीव दयाप्रतिपाण ॥ ३७ ॥
ज्योतिवंत जिनहर चोवीश, महोत्सव महिमा होय निसदिश,
महीधर पर्वत शेत्रुंज जोड, पांच प्रासाद नमुं कर जोड ॥ ३८ ॥
सोल छे ताले शत्रुंजय भणी, कल्याणसेन राजा ते गुणी,
संघ सबळ लइ महा मंडाण, त्रण वरसे फरी पंथ प्रमाण, ॥ ३९ ॥
संमेताचल आव्या मनरंग, जिनना थुभ नम्या ते चंग,
चंपापुरी पहोता नरराज, वासुपूज्य पुज्या जिनराज ॥ ४० ॥
विमलाचळनो पूछ्य पंथ, तव ते वचन कहे निर्ग्रंथ ॥ ४१ ॥
अढार सय कोस इहा थकी, अम्हे आव्या प्रणमी तिहांथकी,
त्रण प्रदिक्षण तेहनी दीध, शेत्रुंज यात्रा फल ते लीध ॥ ४२ ॥
पंथ दोहिलो न सहे वारि, माणस मांदां संघ मझार,
ते कारणे संघवत्सल करी, वित्त वावरियुं प्रेमे धरी ॥ ४३ ॥

यहां से सो कोस आगे सुवर्णक्रांति नाम की नगरी शोभायमान रही है । वहाँ कल्याणसेन नाम का राजा राज्य करता है, वह जैन धर्मी और जीवदयाका प्रतिपालक है । यहाँ जिनेश्वरोंके चौवीश मंदिर है और रोज वहाँ महिमा महोत्सव होता है । यहाँ शत्रुंजय जैसा महिधर नाम का पर्वत है वहाँ बसे पांच प्रासादो को हाथ जोडकर नमस्कार करता हुं ।

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

राजा कल्याणसेन स.१६४६ में शेत्रुंजयकी यात्रा निमित्ते बडा संघ लेके नीकले थे । तीन साल लंबा पथ करके वह सम्मेतशिखर पहोंचे, और मनसे रंगपूर्वक उत्तम जिनेश्वरके स्तुपां की वंदना की । वह राजा चंपापुरी पहोंचे और यहाँ श्री वासुपूज्य स्वामी की यात्रा की । यहाँ भानुचंद्र वाचक के दर्शन हुए और उनके द्वारा कई समस्याओंका समधान हुआ । राजाने विमलाचल का मार्ग पूछा श्री भानुचंद्रने कहा कि हम श्री विमलाचल के दर्शन करने के लिए यहा पहुंचे है वह यहाँ से अढारसो कोस आगे है । राजाने वही तीन प्रदक्षिणा लेके शंत्रुजय यात्रा का फल प्राप्त किया, उस राजाने सोचा कि पथ कठिन है समुदाय को पानी अनुकुल नही आता, और संघ मे ज्यादा मनुष्य बिमार हो गये है इसलिए वहा का पानी राज नही आया एसा सोच के उसने वहाँ संघ वत्सल को प्रेम पूर्वक द्रव्य दिया । ३७-४३

बावन मण मरी शाक ज मांय, द्रव्य संख्या नही बीजी त्यांय,
वासुपूज्य मंदिरनी भीत, तेणे लखियु एणी रीत, ॥ ४४ ॥
भक्तामर भाषा गीर्वाण, समज्या साधु सवी सुजाण,
मांहोमाही वांद्या पाय, एक आचारी ते मुनिराय ॥ ४५ ॥
वली मनमाही हरख्या घणु, दर्शन दीठु सोहामणुं वीर पटोधर
वंशे हुआ पंचम आरे गच्छ जुजुआ ॥ ४६ ॥

कीए गए संघवत्सल के दौरान सब्जी में बावन मण तो काली मीर्च का उपयोग कीया था, और दूसरी द्रूव्य संख्या का तो पार ही नही था । वासुपूज्य स्वामीके मंदिर की दिवार पर उन्होने इस तरह से लीखा । भक्तामरकी गीर्वाण (संस्कृत)भाषा सभी जानकार साधु समझ गए । ये सब मुनिराज एक आचारवाले थे । फिर मनही मन बहुत प्रफुल्लित हुए । एसा सुंदर दर्शन कीया । वीर परमात्मा के वंश में ये पंचम आरे में बहोत गच्छ हुए । ४४-४६

जैन राज्य ए उतरदिशे, दान दयाए करी उल्हसे,
लाहोरवासी खत्री सही, एह वात विस्तारी कही, ॥ ४७ ॥
सोल ब्यासीए सुपर जेह, जोई आव्यो उल्हासे तेह,
निजगुरुमुखथी मे सांभळी, अति आनंदे बोले वळी, ॥ ४८ ॥

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 21

अष्टापद तीर्थ छे वडु, दूर देशांतर नहि हुं कडुं, गिरि ॥ ४९ ॥
पांचे तीरथ परगट उदार, दिनदिन दीपे महिमा धार,
धन धन नर नारी वळी जेह, प्रणमे पूजे तीरथ एह । ॥ ५० ॥

उत्तर दिशामें वह जैन राज्य है । दान और दया से वह उल्हास पाता है । ये सब उत्तर दिशा की बात लाहोर के रहनेवाले एक खत्रीने बताई थी । ये खत्री सं१६८२में अच्छी तरहसे उल्हास को देख आये थे । मैने यह बात गुरु के मुख से जो सुना वही लिखा है । और उन्होने अति उल्लास के साथ कहा है कि अष्टापद तीर्थ बहोत बडा है फिर भी नजदीक नही है बहुत दूर है । और उसके अलावा शत्रुंजय, रैवत, अर्बुदगिरि, संमेतशिखर और मुक्तागिरि यह पांच तीर्थ प्रसिद्ध - उदार और दिन प्रतिदिन अधिक महिमा धारण करनेवाले है । वह स्त्री और पुरुष धन्य है जिन्होने यह तीर्थो को नमस्कार किया और पूजा है । ४७-५०

उत्तर दिशिनी तीरथमाल, हरखे बोली अतिहि रसाल,
यात्रा फळ सुणतां ते थाय, भावे भणता पातक जाय, ॥ ५१ ॥
दिशि चारे उजेणी थकी, मध्यदेश मालवनी वकी,
तीरथ कारण कहीए वळी, हरखे जोया ए मन रुळी ॥ ५२ ॥
दिसह विविह चरियं जाणिज्जण दुज्जइ सज्जण विसेस ।
अप्पाणं च किलिज्जइ, हिडिज्जइ तेण पुहवीए ॥ ५३ ॥
धन्य दिवस ते वेळा सार, धन्य जीव्यु माणस,
अवतार तीरथयात्रा करे सुजाण, ते नरनारी लहे कल्याण ॥ ५४ ॥

उस तरह से उत्तर दिशा की अति रसाण तीर्थमाण हर्षपूर्वक कही । इस तीर्थमाला को सुनते ही यात्रा का फल मिलता है, और भाव पूर्वक कहने से पाप दूर होता है । उपर जैसै चारो दिशाओ की बांधणी उज्जैनीसे की हुई है । क्योंकि मालवा वह मध्यदेश में गिना जाता है और तीर्थ की वजह से चार दिशाओं की बात कही है । वहां मनको आनंद अपार देने वाले तीर्थो को हर्ष से देखा है । कहा है कि भिन्न प्रकार के ये चरण देखे और दुर्जन-सज्जनकी विशेषता को समझे तो आत्मा भी दुख सहन करना शीखे, इसलिए पृथ्वी पर प्रवास करना योग्य है ।

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

मनुष्य अवतार में जितना सुना उतना सारभुत है । वह पल और वह दिन धन्य है कि उस दिन सज्जनो-समझदारो तीर्थयात्रा करते है और वह स्त्री और पुरुष अपने आप ही खुद का कल्याण करते है । ५१-५४

इह चार दिगवधु कंठ राजे, तीर्थ मणिमय माळसे,
जस दरिस परिमल लहे निर्मण, भविक भृंग रसाळ ए,
बुधशिवविजय शिश शीलविजये, अक्षय आणंदे अतिघणु,
करकमळ जोडी कुमति छोडी, कर्यु तवन सोहामणुं ॥ ५५ ॥

यह चार दिशारुपी जिनके कंठमें तीर्थरूपी मणिमय माला शोभती है । जिसके दर्शनरुपी रसाल और निर्मल परिमल भव्य जीवरूपी भमराओंकी लेते है-ग्रहण करते है । पंडित शिववियजयके शिष्य शीलविजयको अनंत आनंद हुआ है, वह जिन्होने दो हाथ जोडी-कुमतिको त्याग करके इस सुंदर स्तवन-तीर्थमाला रची है । ५५.

इति चार दिशाओ की तीर्थ की तीर्थमाला संपूर्ण...

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 22

(15) जैनाचार्य श्री कल्याणसूरिजी और सम्राट सिकंदर

भारत पर सिकन्दर का आक्रमण

ईसाई धर्म और मुस्लिम धर्म की स्थापना से पहले अरब आदि देशों तथा यूरोप में श्वेतांबर मूर्ति-पूजक जैन धर्म फैला हुआ था । उस समय यूनान के मकदूनिया में वहाँ के अधिकारी किलिप के घर सिकन्दर का जन्म हुआ । यह समय ईसा मसीह से ३५६ वर्ष पहले का माना जाता है । सिन्कदर २० वर्ष की आयु में अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् राज-गद्दी पर बैठा । राज-सिंहासन पर बैठते ही सिकन्दर ने मिश्र, ईरान आदि देशों पर विजय पाकर उनको अपने अधीन कर लिया।

तदन्तर अफघानिस्तान को जीतता हुआ भारत में प्रविष्ट हुआ । फिर बलोचिस्तान को जीतकर उसने ईसामसीह से ३२६ वर्ष पहले ओहिन्द के स्थान पर सिंघ नदी पर नावों का पुल बनाया और उस पुल पर से अपनी सेना को पार कराया । उस समय तक्षशिला का राजा अम्भीक था, उसने सिकन्दर की अधीनता स्वीकार कर ली ।

राजा पुरु उस समय पंजाब में झेलम नदी के पूर्वी भाग में राज्य करता था । राजा अम्भीक ने सिकन्दर को उकसाया कि वह राजा पुरु (पोरस) पर आक्रमण करके अपने राज्य का विस्तार करे ।

तदनुसार सिकन्दर ने आगे बढ़कर राजा पुरु के राज्य पर आक्रमण कर दिया, परन्तु राजा पुरु उसके आक्रमण को विफल करने के लिए अपनी वीर सेना को लेकर झेलम नदी के तट पर आ डटा । राजा पुरु के वीर सैनिकों के तीक्ष्ण बाणों की मार से सिकन्दर की सेना झेलम नदी को पार न कर सकी । तब सिकन्दर ने अपनी कुछ सेना को रात्रि के समय एक अन्य स्थान से नदी पार कराकर राजा पुरु की सेना के पिछले भाग पर आक्रमण कर दिया । आकस्मिक आक्रमण के कारण तथा वर्षा होने से युद्ध भूमि मे कीचड हो जाने के कारण पुरु के सैनिक युद्ध में न टिक सके । वे जैसे ही

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

अपने धनुष पृथ्वी पर बाण छोड़ने के लिए टेकते थे कि उनके धनुष कीचड़ में फिसल जाते थे। अत: युद्ध में राजा पुरु हार गया परन्तु राजा पुरु की वीरता से प्रसन्न होकर सिकन्दर ने राजा पुरु का राज्य उसे लौटा दिया।

तदन्तर सिकन्दर की सेना ने आगे बढ़ना अस्वीकार कर दिया, तब सिकन्दर अपने देश को वापिस लौट गया, परन्तु बगदाद के निकट बाबलन स्थान पर सिकन्दर की मृत्यु हो गई।

भारत के जीते हुए प्रदेश पर सिकन्दर का महान सेनापति सेल्यूकस शासन करता था। उस समय चन्द्रगुप्त ने सेल्यूकस के साथ युद्ध करके उसे परास्त कर दिया और पंजाब से तथा भारत के बलोचिस्तान प्रदेश से यूनानियों को निकाल बाहर किया। इतना ही नहीं बल्कि काबुल, कंधार को भी जीतकर अपने राज्य में मिला लिया। कुछ इतिहासकारों का मत है कि सेल्यूक्स जब चन्द्रगुप्त से युद्ध में हार गया, तब उसने अपनी सुन्दरी कन्या हेलना का विवाह चन्द्रगुप्त के साथ करा दिया और काबुल कंधार का प्रदेश चन्द्रगुप्त को देकर उससे सन्धि कर ली।

सेल्यूक्स का राजदूत मेगस्थनीज चन्द्रगुप्त की राजसभा में रहता था। मेगस्थनीज ने अपनी पुस्तक **(Ta Indika)** टा इण्डिका में उस समय के मौर्य-सम्राट चन्द्रगुप्त के सुसंगठित शासन का सुन्दर वर्णन किया है।

जैनाचार्य कल्याणसूरि से भेंट

भारतवर्ष पर आक्रमण करते समय सिकन्दर ने जैन साधुओं के उच्च चारित्र और कठोर तपस्या के विषय में बहुत कुछ प्रशंसा सुनी थी। इससे उसके हृदय में जैन साधुओं के दर्शन करने की उत्कंठा बहुत प्रबल हो गई।

ईसवी सन् पूर्व **326** के नवम्बर मास में सिकन्दर **(Alexander)** ने अटक के निकट सिन्ध नदी को पार किया तब वह तक्षशिला **(Taxcilla)** में आकर ठहरा। उस समय उसे ज्ञात (मालूम) हुआ कि यहाँ पर अनेक जैन साधु **(Gymnosophist)** एकान्त स्थान में रहकर तपस्या करते है।

1. Dr. Baner's travels in the Mughal Empire-317

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 23

सिन्कदर ने अपना एक चुतर दूत जिसका नाम अंशकतस **(Onesikrates)** था, उन जैन साधुओं के पास भेजा की एक साधु को आदर के साथ मेरे पास ले आओ।

अंशक्तस् जैन मुनियों के निकट पहुँचा। उसने साधु-संघ के आचार्य से कहा कि आचार्य महाराज आपको बधाई है। शक्तिमान देवता **(Zeus)** यानी परमेश्वर का पुत्र सम्राट सिकन्दर जो कि समस्त मनुष्यों का राजा है, उन्होने आपको अपने पास बुलवाया है। यदि आप उसका निमन्त्रण स्वीकार करके उसके पास चलेंगे तो वह आपको बहुत पारितोषिक प्रदान करेगा। यदि आप निमंत्रण अस्वीकार करके उसके पास न जावेंगे तो वह आपका सिर काट लेगा।

श्रमण साधुसंघ के (आचार्य दुप्पसहसूरिजी म.) सुखी घास पर लेटे हुए थे, उन्होंने लेटे-लेटे ही सिकन्दर की बात सुनी और मन्दस्मित से (मुस्कराते हुए) अंशक्तस को तिरस्कारपूर्वक (लापरवाही से) उत्तर दिया।

सबसे श्रेष्ठ राजा-ईश्वर कभी बलात् (जबरदस्ती) किसी की हानि नहीं करता और न वह प्रकाश, जीवन, जल, मानवीय शरीर तथा आत्मा का बनाने वाला है, न वह इनका संहारक (विनाशक) है। सिन्कदर देवता नहीं है, क्योंकि उसकी एक दिन मृत्यु अवश्य होगी। वह जो कुछ पारितोषिक देना चाहता है वे सभी पदार्थ मेरे लिए निरर्थक है, मैं तो एक आसन पर सोता हूँ, ऐसी कोई वस्तु अपने पास नहीं रखता जिसकी रक्षा की मुझे चिन्ता करनी पड़े का भंग जिसके कारण करना पड़े। यदि मेरी कोई संपति होती तो मैं ऐसी निश्चिन्त नींद न ले सकता। पृथ्वी मुझे सभी आवश्यक पादार्थ प्रदान करती है, जैसे बच्चे को उसकी माता पूरी तरह सुख देती है। मैं जहाँ जाता हूँ वहाँ मुझे अपनी उदर पूर्ति के लिए आवश्यकतानुसार सब कुछ (भोजन) मिल ही जाता है। कभी नही भी मिलता तो भी उसकी कुछ चिता नही करता यदि सिकन्दर मेरा सिर काट डालेगा, तो वह मेरी आत्मा को तो नष्ट नही कर सकता। सिकन्दर अपनी धमकी से उन लोगों को भयभीत करे जिन्हें सुवर्ण धन आदि की इच्छा हो या जो मृत्यु से डरते हों। सिकन्दर के ये दोनों अस्त्र (आर्थिक लोभ लालसा तथा मृत्युभय) हमारे लिए शक्तिहीन है: व्यर्थ है। क्योंकि न हम सुवर्ण (सोना) चाहते है और न मृत्यु से डरते है।

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

मृत्योर्विभेषि किं मूड, भीतं मृत्युनं मुंचति ।

इसलिए जाओ, सिकन्दर से कह दो कि दौलामस को तुम्हारी किसी भी वस्तु की आवश्यकता नहीं, अतः वह (दौलमस) तुम्हारे पास नहीं आयेगा। यदि सिकन्दर मुझसे कोई वस्तु चाहता है तो वह हमारे समान बन जाये ।

सिकन्दर के दूत अंशकतस् ने आचार्य दौलामस की सब बातें बहुत ध्यान और शान्ति से सुनीं। फिर वह वहाँ से चलकर सम्राट सिकन्दर के पास आया उसने दुभाषिया द्वारा सिकन्दर को आचार्य दौलामस की कही हुई सब बातें सुना दी ।

सिकन्दर को आचार्य दौलामस का निर्भीक उत्तर सुनकर उनके दर्शन करने की उत्कण्ठा और भी प्रबल हुई, उसने सोचा कि जिसने अनेक देशों पर विजय पाई वह सिकन्दर वृद्ध साधु द्वारा परास्त हो गया (हार गया) ।

सिकन्दर ने दौलामस मुनि की मुक्तकंठ से प्रशंसा की और मुनि को अपनी इच्छानुसार कार्य करने दिया । कहा जाता है कि उसके पश्चात् श्री आचार्यवर दौलामस और सम्राट सिकन्दर की भेट नहीं हुई परन्तु सिकन्दर साधुओं के उच्च आचार और कठोर तपस्या से प्रभावित हुआ। उसने उन साधुओं द्वारा अपने देश यूनान में धर्म प्रचार कराना हितकारी समझा। तदनुसार वह कल्याण (कालनस) नामक आचार्य से विनयपूर्वक मिला। कल्याण (कालनस) आचार्य दौलामस के संघ के एक शिष्य थे ।

सिकन्दर की प्रार्थना सुनकर आचार्य कल्याण सूरि ने धर्मप्रचार के लिए यूनान जाना स्वीकार कर लिया परन्तु कल्याण (कालनस) सूरि का यूनान जाना आचार्य दौलामस को पसन्द न था ।

जब तक्षशिला से सिकन्दर अपनी सेना के साथ यूनान को लौटा, तब कल्याण सूरि ने भी उसके साथ विहार किया। कल्याण सूरि के साथ कौन-कौन भारतीय जैन साधु और श्रावक यूनान की और गये - इस बात का उल्लेख इतिहास में नही मिलता ।

यूनान को जाते हुए मार्ग में बाबिलन स्थान पर जून ३२३ ई.पू. दिन के तीसरे पहर ३२ वर्ष, ८ मास की आयु में महान विजेता सिकन्दर मृत्यु की गोद में सौ गया। उसकी इस मृत्यु की भवीष्यवाणी पहले ही कल्याण सूरि ने की थी ।

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 24

अन्तिम समय सिकन्दर ने कल्याण सूरिजी के दर्शन करने की इच्छा प्रकट की और कल्याणसूरिजी ने उसे दर्शन दिये और धर्म उपदेश दिया ।

सिकन्दर ने अपनी इच्छा प्रकट की कि मेरे मरने के पश्चात् संसार को शिक्षा देने के लिये अर्थी से बाहर मेरे खाली हाथ रखे जावें और मेरे जनाजे (शबयात्रा) के साथ अनेक देशों से लूटी हुई विशाल सम्पत्ति श्मशान भूमि (कब्रिस्तान) तक ले जाई जावे, जिससे जनता अनुभव कर सके की आत्मा के साथ कोई भी सांसारिक पदार्थ नहीं जाता। सिकन्दर की मृत्यु के पश्चात् ऐसा ही किया गया। सिकन्दर की अर्थी को पहले चार राजवैद्यों ने अपने कन्धे पर रखा, यह इस बात का प्रतीक था की महान वैद्य भी मृत्यु की चिकित्सा (ईलाज) नही कर सकते ।

सिकन्दर की शब यात्रा पर निम्नलिखित छन्द एक कवि ने लिखा जो कि अब तक प्रसिद्ध है -

"सिकन्दर शहनशाह जाता रहा, सभी हाली वहाली थे ।
सभी थी संग में दौलत, मगर दोनों हाथ खाली थे ॥"

यानी - सिकन्दर ने अनेक देशों को जीतकर बहुत ही सम्पत्ति एकत्र की परन्तु मरते समय वह अपने साथ कुछ भी न ले जा सका। परलोक जाते समय उसके दोनों हाथ खाली ही रहे। अपने जीवन में भलाई-बुराई से उपार्जित किया पुण्य-पाप ही उसके साथ गया ।

जैनाचार्य कल्याणसूरिजी ने आयु के अन्त में शान्तिमयी समाधि के साथ प्राण-त्याग किया। उनका शब बड़े सम्मान के साथ चिता पर रखकर जलाया गया।

एथेन्स नगर में जैनाचार्य कल्याण सूरिजी के चरण-चिह्न प्रसिद्ध स्थान पर अभी भी अंकित हैं ।

संबंधित एतिहासीक उल्लेख

'Onesikritos says that he himself was sent to converse with these sages. For Alexander heard that his men (Sramans) went about inused themselves to hardships and were held on highest honour, that when invited they did not go to other persons.'[1]

Al. P. 69 - '(Alexander) despatched On esikritos to them (gymnosophists) who relates that he found at the distance of 20 Mc orindle Ancient India-70 stadies from the city (of Taxila) 15 men

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

standing in different postures, sitting or lying down naked who did not move from these positions till the evening, when they return to the city. The most difficult thing to endure was the heat of the sun etc.,

Calanus bidding him (Onesti) o strip himself if he desired to hear any of his doctrine.[1]

अन्शक्रतस सिकन्दर द्वारा इनके पास भेजा गया था और उसका कथन है कि उसने तक्षशिला शहर के बीच स्टेडिस की दूरी पर १५ व्यक्तियों को विभिन्न मुद्राओं में देखा, वे या तो बैठे हुए या लेटे हुए थे, जो कि शाम तक इन आसनों से नहीं हिलते थे और शाम के समय शहर में आ जाते थे। सूर्य की गर्मी आदि सहन करना अत्यन्त मुश्किल कार्य था।

कालानस ने उससे कहा-यदि वह उसके किसी भी सिद्धान्त को सुनना चाहता है तो स्वयं को उसके अनुकूल बनावे।

..... the term joins.................. is referred to in the well known Greek Phrase, Gymnosophists, used already by Megasthenes, which applies very aptly to the Niganthas (Jainas.)[2]

जैन शब्द की ग्रीक भाषा में गेगस्थनीज के द्वारा प्रयुक्त शब्द, "जिम्नोसोफिस्ट" का अर्थ मुनियों से है जो कि जैनियों के (निगण्ठ) निर्ग्रन्थों के लिए लागू है।

'A calendar fragment discovered at Milet & belonging to the 2nd century B.C. gives several weather forecasts on the authority of Indian Calanas.'[3]

ईसामसीह से सौ वर्ष पूर्व काल के एक कलेण्डर के टुकड़े मिलेट में पाये गये। उससे भारतवासी कालानस की भीसमों के बारे में की गई भविष्यवाणी का पता चलता है।

Aristoboulos-says 'Their (Gymnosophists), spare time is spent in the marke-lace in respect their being public councillors they receive great homege. etc.[3]

अरिस्तांबुल कहता है कि वे (जैन मुनि) बचे हुए समय का सदुपयोग बाजार के बीच लोगों को उपदेश देने में बिताते है तथा वहाँ उनको बहुत ही उच्च दृष्टि से देखा जाता है।

---

1 Plutarch. Al., P. 71
2 Encylopadia Britannica (11th ed.) Vol., XV, P. 128.
3 QJMS, XVIII, 297

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 25

Cicero (Tusc, Disput. V. 57) - 'What for land is more vast & wild than India ? Yet in that nation first those who are reckoned sages spend their lifetime & endure the snows of Caucaus & the rage of winter without grieving & when they have committed their body to the flames, not a groan escapes them when they are burning.

Clemens Alexendrinus 'Those Indians, who are called Sramans go all their lives. These practise truth, make predictions about futurity and worship a kind of pyramid lie burried, (stupas)[1].

भारतवर्ष के सिवाय ऐसा अन्य कौनसा देश इतना अधिक विस्तृत एवं विभिन प्रकार का है ? फिर भी उस जाति में सर्वप्रथम माने जाने वाले मुनि आजीवन रहते हैं और काकेशस पहाड़ सरीखी बर्फ एवं शीतकाल की प्रचुरता को बिना हिचकिचाहट के सहन करते है और जब कि वे अपने शरीर को अग्निशिखा (सूर्य के प्रखर किरणों) को समर्पण कर देते हैं. तो जलते हुए भी उनके मुँह से चूँ तक नहीं निकलती।

श्रमण (जैन साधु) कहे जाने वाले भारतीय आजीवन घूमते हैं। यह सत्य का अनुसरण करते हैं, भविष्यवाणियाँ करते हैं और स्तूप (मानस्तंभ) की पूजा करते हैं।[2]

St. Jerome... Indian Gymnosophists. The king on coming to worship them & the peace of his dominions depends according to his judgement on their prayers.[3]

Every wealthy house is open to them to the apratments of the women. on etering they share the repast.[4]

"राजा जैन मुनियों के पास आकर उनकी पूजा करता है और उसके राज्य में सुख, शान्ति का वातावरण उनकी प्रार्थनाओं एवं उसके निर्णय के अनुसार निर्भर रता है ?"

"प्रत्येक धनी व्यक्ति का घर स्त्रियों के निवास स्थान तक भी उनके लिए खुला रहता है।"

---

1 Al, P. 163
2 मानस्तभादि स्तूपनाम् - श्रेणिक पुराण
3 ..... Al. p. 181
4 .... Al. p. 71

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

प्रसिद्ध लेखक - रेवेरेण्ड जे. स्टेवनसन, अध्यक्ष रायल एशियाटिक सोसाइटी इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि जैनधर्म प्राचीन समय से अब तक पाया जाता है। ग्रीक लोगोंने पश्चिमी भारत में जिन जिमनोसोफिस्टों का वर्णन किया है, वे जैन लोग थे। वे न तो बौद्ध थे और न ब्राह्मण थे। सिकन्दर ने जैनों के समुदाय को तक्षशिला में देखा था, उनमें से कालोनस (कल्याण) नामक जैन महात्मा फारस तक उसके साथ गये थे। इस युग में यह धर्म २४ तीर्थंकरों द्वारा निरुपित किया गया है, उनमें भगवान महावीर अन्तिम हैं। मूल लेख यों है -

As a sect the Jains have continued to exist among them from the old Days to the present day, the only conclusion that is left to us that the Gymnosophists, whom the Greeks found in Western India where Digambarism still prevails, were Jains and neither Brahmanas nor Budhists and that it was a company of this sect that Alexander fell in with near Taxila. One of them Calanus followed him to Persia. The creed has been preached by 24 Tirthankaras in the present cycle. Lord Mahavira being tha last.

..... When Alexander arrived at Taxacila and saw the Indian Gymnosophists (Jain Muni), a desire seized him to have one of these men brought into his presence, beacuse he admired their endurence. The eldest of these sophists with whom the others lived as disciples was a master Daulamus by name, not only refused to go himself, but prevented the others going. He is said to have won over kalanus one of the sophists of the place.[1]

यानी-जब सिकन्दर तक्षशिला में गया था तो उसने जिम्नोसोफिस्ट जैन सूफियों (जैन मुनियों) को देखा था, उनकी सहनशीलता को उसने (सिकन्दर) ने मान्य किया था और उनमें से एक को साथ ले जाने की इच्छा प्रकट की थी। इन साधुओं में जो सबसे ज्येष्ठ बुद्ध आचार्य दौलामस थे दूसरे इनके पास सब शिष्यों की भाँति रहते थे, उन्होंने स्वयं जाना स्वीकार नहीं किया और न दूसरों को जाने की आज्ञा दी। तब सिकन्दर ने उनमें से एक कालानस (कल्याण-जैन जैनाचार्य) को जाने को राजी कर लिया।

"जिस समय सिकन्दर महान ने भारत पर आक्रमण किया था, तो उससे

1 The Life of the Budha, by E.I. Thomas (1927), Page 1 15

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 26

सीमा प्रान्त पर तक्षशिला के पास बहुत से जैन मुनि मिले थे। उनके ज्ञान, ध्यान, विद्या तथा तप की तारीफ सुनकर सिकन्दर उनको देखने के लिए लालायित हुआ था और आखिर वह कल्याण नामक जैनाचार्य को साथ ले गया था।"[1]

The savans of Alexander found Jainas Budhism strongly in the ascendant throughout Baktia, Oxiana, and all the passes to from Afganistan and India.[2]

यानी - सिकन्दर के आदमियों ने जैन, बौद्ध धर्म को वैकटिया, ओक्सियाना व अफगानिस्तान और भारत के बीच को सर्वघाटियों में उन्नत रुप में फैला हुआ पाया था।

There ware gymnosophists or Saints in India but they were not budhists.[3]

यानी - प्राचीन - काल में भारत में जैन साधु या सूफी थे, परन्तु वह बौद्ध न थे।

This then was the theory and practise of great Jaino-Budhist religion which flourished in India many centuries before and after the teaching of Gautam Sakyamuni. It was certainly long prior to parsva and Mahavira. While East India was certainly the fruitful centre of religion from 7th Century B.C. Yet trains.Himalaya, Oxiana, Baktria and Kaspiana seen to have still earlier developed similar religious view and practices as Indian Jain and Buidha claims and almost historically show, that about a score of their saintly leaders Perambulated the Eastern world long prior to 7th Century B.C. Many reasonably believe that Jainism was very anciently preached by them from china to Kasplana. It existed in Oxiana and North of Hiamalaya 2000 years before Mahavira.[4]

यह इस महान जैन-बौद्ध धर्म का सिद्धान्त आचरण था जो भारत में गौतम शाक्य मुनि के बहुत सी शताब्दियो पहले व पीछे फैला हुआ था। जब भारत ७ वी

1 वीर वर्ष 7, पृष्ठ 177
2 'Science of comparative religions' by Major General J.B.S.R. Foriong, (1897), Page 40
3. The life of the Budha by E.I. Thomas (1957), Intro, Page 74
4. 'Science of comparative religions' by Major General J.B.S.R. Forlong F.R.B.E.F.R.A. S.M.A.L. (1897), P. 28

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

शताब्दी पूर्व से इस धर्म का वास्तव में फैलता हुआ केन्द्र था। हिमालय के पार, ओक्सियाना, बैकंड्रिया, कास्पियाना इससे भी बहुत पहले से ऐसे ही धार्मिक सिद्धान्त व आचरण में उन्नति कर रहे थे, जैसे भारतीय जैन और बौद्धों के हैं। लगभग एतिहासकि दृष्टि से यह प्रकट होता है कि सातवी शताब्दी पूर्व से बहुत पहले से २० से अधिक साधु तीर्थंकरों ने पूर्वीय संसार में धर्म का प्रचार किया था। हम बहुत उचित रीति से विश्वास कर सकते है कि जैनधर्म बहुत ही प्राचीन काल से उनके द्वारा चीन से कास्पियाना तक उपदेशित होता था। वह धर्म ओक्सियाना और हिमालय के उत्तर महावीर से २००० वर्ष पूर्व मौजूद था।

The selection of these short studies has enabled us to virtually embrace and empitomise all the faiths and religious ideas of the world as well as to lay base the deep-seated teproot from which they sprang viz. the crude yatism, jati or as cetism of thoughtful jatis as gains who in man's earliest ages have on all lands separated themselves from the world and dwelt upon pious motions in lonely forest and mountain-caves.[1]

यानी - इस कुछ पठन-पाठन से हमने दुनिया के सारे विश्वासों तथा विचारों का विमर्श किया है तथा वे भाव कहाँ से उठे उस मूल (जड़) को ढूँढा है, तो कहना होगा, कि "वे भाव विचारशील जैन साधुओं से उठे हैं।" ये जैन साधु अति प्राचीन काल से पृथ्वी पर रहते थे, जो संसार त्याग कर पवित्र उद्देश्य से एकान्त वनों व पर्वत की गुफाओं में रहा करते थे।

"उस जमाने की तवारीख से पता चलता है कि पश्चिमी एशिया, यूनान, मिश्र और इथियोपिया के पहाड़ों और जंगलो में उन दिनों हजारों जैन-सन्त महात्मा जा-जाकर जगह-जगह बसे हुए थे। यह लोग वहाँ बिलकुल साधुओं की तरह रहते और अपने त्याग और अपनी विद्या के लिए वहाँ मशहूर थे।"[2]

I have often met general in the territory of some Raja bands of

1 'Science of comparative religiouns' by Major General J.B.S.R. Floriong F.R.B.E.F.R.A. S.M.A.L. (1897), P. 28

2 हजरत ईसा और ईसाल धर्म, लेखक-इतिहास वेता श्री पं. सुन्दरलाल पृष्ठ 22

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 27

these nacked Fakirs. I have seen them walk stark nacked through a large town women and girls looking at them without any more emotion than may be created when a hermit passes through our streets. Females often bring them alms with devotion......

औरंगजेब के समय में भारत आने वाले डॉ. बर्नियर अपनी पुस्तक में लिखते हैं - मुझे बहुधा ऐसी रियासतों में जैन मुनियों का समुदाय मिलता था। मैंने उन्हें बड़े शहरों में विहार करते हुए उन्हें देखा है और स्त्रियों, लड़कियों को किसी विकारयुक्त हो दृष्टिपात करते नहीं देखा है, उन महिलाओं के अन्त करण में वे ही भाव होते हैं जो सड़क पर जाते हुए किसी आदमी को देखने से होते हैं, महिलाएँ भक्तिपूर्वक उनको आहार बहुधा कराती थी।

जैन मुनि हर समय पवित्र आर्य भूमि को अपने चरणरज से पवित्र करते आये हैं। इस बात का इतिहास दुनिया के सामने साक्षी हैं।

वे सभी सम्राट स्वयं शुद्धाचरणी थे, इनके शासन काल में निरपराध प्राणियों की हत्या बन्द रही। लोग सुखी और समृद्धशाली थे, सभी अपने-अपने नियतकार्यों को किया करते थे। एक को दूसरे के प्रति ईर्ष्या या द्वेष नहीं था। ऊँच-नीच के भेद को पुण्य-पाप का फल समझते थे, इसलिए पाप कर्म से हटकर पुण्य कर्म करने का यथाशक्ति प्रयत्न करते थे। शासक कभी किसी के धर्म या सामाजिक नियम में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नही करते थे। राजा रक्षा-व्यवस्था के लिए भूमि और चुंगी कर के अतिरिक्त कोई कर नहीं लेते थे। सुराज्य, जिसे लोग चाहते थे। दक्षिण भारत में गगवंशीय आदि जैन धर्मानुयायी राजाओ ने सैकड़ों वर्ष तक निष्कंटक राज्य किया है। समर धुरंधर चामुण्डराय आदि वीरों ने अपनी शक्ति का परिचय दिया है। इसके अलावा कुमारपाल महाराज, महामंत्री-वस्तुपाल-तेजपाल, पेथडशाह, भामाशाह, जगडुशाह इत्यादि एवं श्राविका अनुपमादेवी, शान्तलादेवी, पाहिनी, आदिने अपनी शक्ति के अनुसार जैन धर्म की प्रभावना में अपना मुख्य योगदान दिया है।

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

जैन नगर तारातंबोल

(16) हस्तप्रति के पन्ने

(A) शेठ बुलाकीदास खन्ना की हस्तप्रति

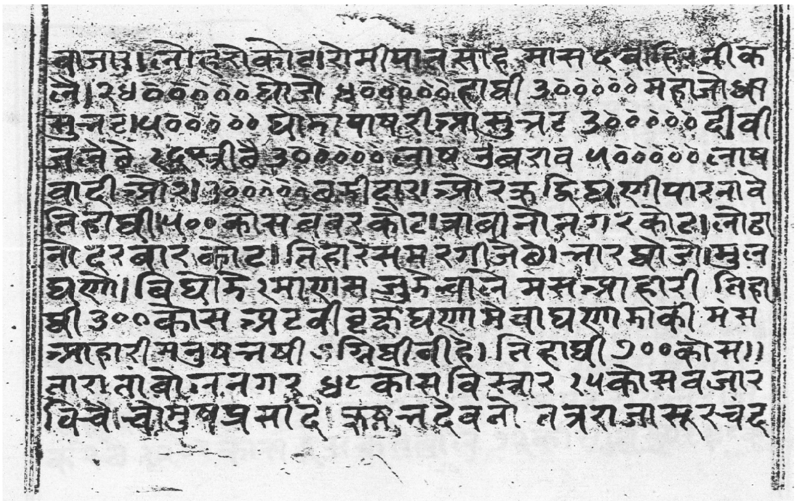
बाजार। नोलखेकोटारोमीपातसाह मास ८ वाहिननीक
लो। २४००००००घोडो ४०००००० हाथी ३०००००० महाजोधा
सुनटा ५००००००घोडा पाषरीआसुन्नर ३०००००० दीवी
जलेवे ८ख्स्त्री वे ३०००००० लाष जेवरात ५०००००० लाष
वादीओरा ३००००० [illegible] दासा ओरकु [illegible] पारनावे
तिहाथी ५०० कोस ववर कोटआवा नो नगरकोट। लोह
ना दरबार कोट। तिहारे समरगाजे [illegible] घोडो मुल
घणो। [illegible] माणस [illegible] मस आहारी तिह
थी ३०० कोस अटवी [illegible] घणा मेवा घणा [illegible] मस
आहारी मनुष्य [illegible] तिहाथी ७०० कोस।।
तारातंबोल नगर ४८ कोस विस्तार १५ कोस बजार
[illegible] पातसाह [illegible] देव नो तत्र राजा सूरचंद

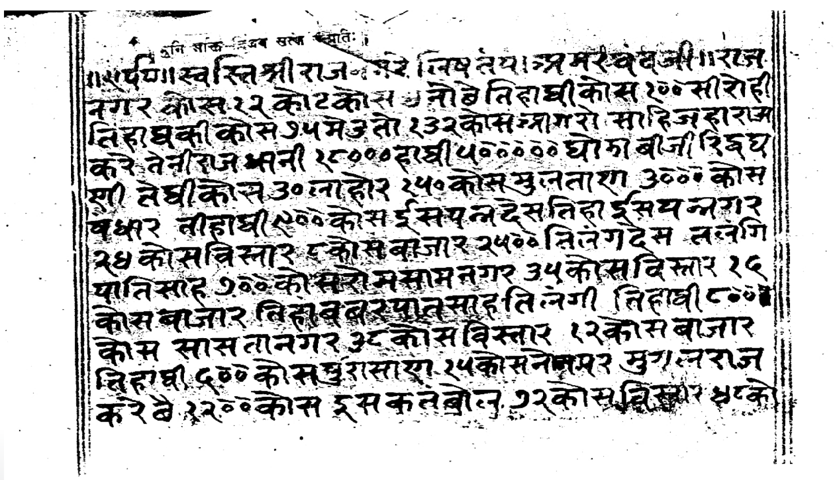
[illegible] सत्त [illegible]ति: ।
।।सर्पण।।स्वस्तिश्री राजनगरे लिषते अमरचंदजी।।राज
नगर कोस २२ कोटकोस ४ नो छे तिहाथी कोस १०० सीरोही
तिहाथकी कोस ७५ मेडता १३२ कोस आगरो साहिजहा राज
करे तेनी राज मानी १८००० हाथी ५०००००० घोडा बीजी रिद्ध
णी तेथी कोस ३० लाहोर १५० कोस मुलतान ३००० कोस
बधार तीहाथी ९०० कोस ईसपहांदेस तिहा ईसपहां नगर
२४ कोस विस्तार ८ कोस बाजार २५०० तिलंगदेस तलंगि
पातिसाह ७०० कोस रोमसाम नगर ३५ कोस विस्तार १८
कोस बाजार तिहा ववरपातसाह तिलंगी तिहाथी ८००
कोस सासता नगर ३८ कोस विस्तार १२ कोस बाजार
तिहाथी ८०० कोस षुरासाण १५ कोस ने नगर मुगल राज
करे छे १२०० कोस इसकलबोल ७२ कोस विस्तार ४८ को

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 28

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

(A)

रउसरीप्रतमादेहराध्यारमैवहोतहै।हमनाववटकरगए
थे सोउहांदरसणकीमामनई।उहांसैआगुहमचले।तिहां
तिलंगपुरनगरहै।उहांवनमैजैनकादेहराहोहतहै।२५
पचीस ववहै।तिसदेहरामेप्रतिमा१एककसाटीकीहै हा
थ९।नवउचीहाथ३।साढातीनचोडीहै।बहोतमनोज्ञहै
दुसरीप्रतमाहजारांहै।उहांसैहमआगुचले कोस२००
सागरा।तिहांतिलघाटीकामुलकहै।तिहांनिवासपुर
पाटणहै।सासमुद्रकीकनारीहै।तिहांएलचीकावनहै
कालीमरचांकीवेलहै।तिहांमुगलागिरपरबतहै उस
परजैनकादेहराहै।५३।तेपनहैपडेजोगहै तिसदेहरा
मेप्रतिमावहोतहै।चोबाकालसमानहै।आराधवाजोग
है।उहांदरसणकरआगेचले सोकरणाटकेकेनाका।

जेनलोकजिनआज्ञापाले श्रीविमलबोधआचार्य हे२०कोस
पाणीपंथथकी।गोमटसामी।कोसहजार२०००दोयहै।।
परवतउपरनिराधार खडा है जागहै।गोमटसामी।जी
के प्रतमाचोडीहै।थरद्रअठार [illegible] उचा हाथ [illegible] चो
पनकीपद जोग है पगकाअंगुठाउपरनाले२२३ तेरस
मातहे।एसीहमजात्राकीनी।उहांथेहमआगुचले तिहांश्री
रंगनामानगरहै।तिसतलावएककोसबारेहै उसतलावके
वीच कोसएककोमहलहै उसमहलमेचेसाला धच्यारहै
आसुपहे प्रतिमाएकदेहरामेअजितनाथजीकीहै चोडी
हाथ धच्यारहै उचीहाथ१२बारेकीहै फिटककीहै उस
रोप्रतमाहाथ९नव।आदिनाथजीकीहै चोडीहाथ२।दोट
कीहै।उचीहाथ धच्यारहै सोप्रतमा वाचंदणकीहै श्री

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 29

(A)

दरसणकीयांउन्अजावसेतीमोष्यहोये।करणाटराजाका
दरबारमाहे।विचे१००एकसोआठथोआकेदेवलहै।मा
सोताबाकाहै।उसदेहरामेप्रतमाअतीत अनागतवर
तमानकी।चोवीसीकी।प्रतमा७२वहोतरसबफिटक
कीहै।जोनीनेरातीपीली।सबआपआपकेवरणकी।
दुसरीप्रतमासबरा।३०००तीनहजारहै।देहरावन
तेचोहै२१।इकवीसमेहपकरसहेतहै।राजाहमेस
सेवाकरतेहै।राजाबहोतगुणीहै।उसनगरकावनमे ए
क१देहराहै उसकापिरणहमदरसणपाए।उहांआगेए
कवनमे।उहांरीदेहराहै।उसकापिरणहमदरसणपाए
फेरआगेउहांवनहै।एकवहांरिषनतमुनीहै।उसकी
९०।नेउवरसकीउमरनइहै एकमहीनापखेआहा

जेनविनादुसरीवातनहीं।।राजा [illegible] सब [illegible] जैनीहै
करणाटकदेसविचे करणाटकसेहरहै सोसेहरविचेएक
हजारचैतालाहै सबदेहराकीप्रतमाहमगणीसोगणकर
लिषीहै।प्रतमा१५०००पनरेहजारहै।दुसरीप्रतमा५२।
एकवनहै।तिसकोविचारकरलिष्योहै।प्रतमा।१।एकलाल
मणीयकीहै।सोआगुल।१०८।एकसोआठकीहैप्रतमा
११इग्यारेमोतीकीहै।आंगुलआआआठकीहै।प्रतमा१९
कगोमेदकीहै।प्रतमा७सातपुषराजकीहै।सोआंगुल
दोट२।कीहै।प्रतमा१४चवदेसाविरतनकीहै।सोवाप
तमाआंगुल३तीनकीहै।प्रतमा१०दसहीराकीहै।आंगुल
धच्यारकीहै।इसीप्रतमाभारीबहोत।मनोज्ञहै।एहवीप्र
तमा।सरवएकावनहै।वलेदुसरीप्रतमाबहोतहै।इसा

(A)

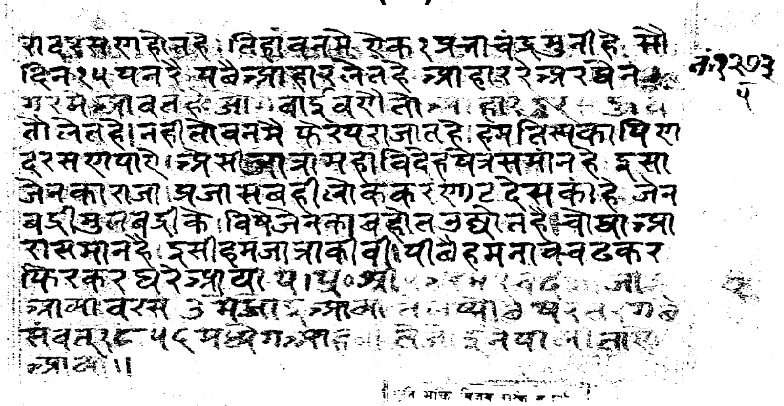

णदरसणहोतहे: तिहांवनमे एकरत्नचंद्रमुनीहे सो
दिन२५ पनरे पछे आहारलेतहे आहाररेअरथे न
गरमे आवतहे आ बाईवरे तो हार
तो लेतहे नहींतो वनमे फेरपराजातहे: हम तिसकापिरा
दरसणपारे: असजात्रा महाविदेहक्षेत्रसमान हे इसा
जैनकाराजा प्रजासबहीलोककरणाट देसकोहे जैन
बद्रीमुलबद्री के विषेजैनकाबहोतउद्योतहे चोथाआ
रासमान है: इसीहमजात्राकीवी यी छे हमनाक्वठकर
फिरकर घेरे आया पापु०श्री
आषावरस ३ मज्ञा
संवत १८ ५८ म
आवा ॥

नं१२७३ ५

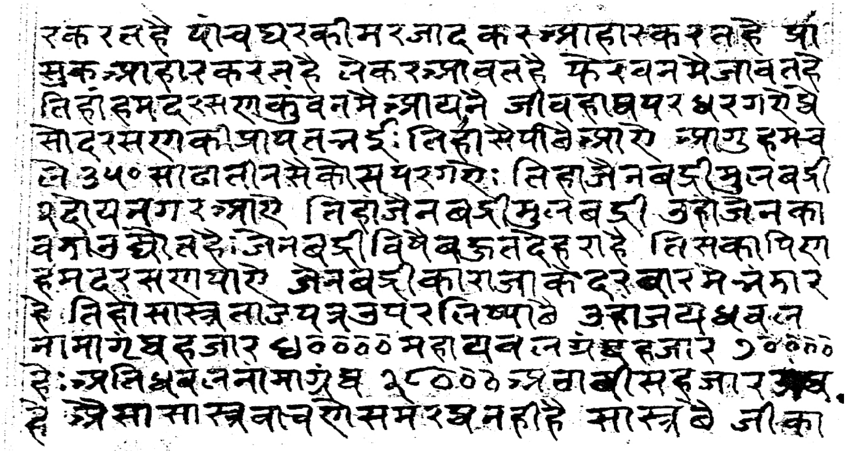

रकरतहे पोत्व घरकी मरजाद कर आहारकरतहे पों
सुक आहारकरतहे लेकर आवतहे फेरवनमेजावतहे
तिहां हमदरसणकुं वनमे आयने जीवदयापर धरगरेहे
सोदरसणकोप्रापतनई: तिहांसेपीछेआरे आगुहमव
ले ३५० साढातीनसेकोसपरगरे: तिहां जैनबद्रीमुलबद्री
रदोयनगरआरे तिहां जैनबद्रीमुलबद्री उहांजैनका
वसोवघोतहे: जैनबद्री विषेबडजतदेहराहे तिसकापिरा
हमदरसणपारे जैनबद्रीकाराजाके दरबारमे भंडार
हे तिहां सास्त्र ताडपत्र उपरलिष्पा छे उराजयधवल
नामांगथ हजार ६०००० महाधवल नमेंह्व हजार १००००
हे: अतिधवलनामांग्रंथ २८००० अगाबीसहजार अब
हे असासास्त्रवाचणेसमेरथ नहीहे सास्त्र छे जीका

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 30

(B) शेठ पमचंदजी की प्रति को पन्ने

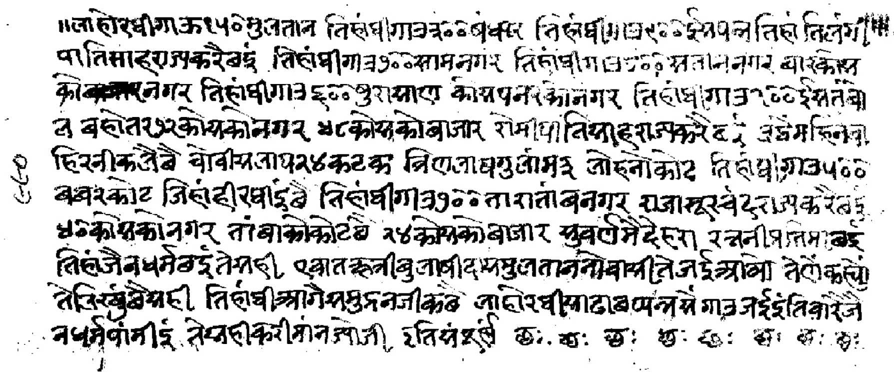

॥जाहांरथीगाऊ१५०मुलतान तिहांथीगाउ३००बंधर तिहांथीगाउ१०० ईसपल तिहां तिलंग ॥
पातिसाहराजकरैछे तिहांथीगाउ७०० सामनगर तिहांथीगाउ ५०० सतानगर बारकोस
को नगर तिहांथीगाउ६०० पुरापाण कायपनरकोनगर तिहांथीगाउ ७०० ईसतवा
ल बहोतर७२कोसकोनगर ४८कोसकोबाजार रामाधा तिहांराजकरैहै उ मलिना
हिरनीकछैछे चोवीसजाप२४कटक निणजाधगुलामर जाहनीकोट तिहांथीगाउ५००
बबरकोट जिहांहीरखाइछे तिहांथीगाउ७०० ताराताबनगर राजासूरसेनराजकरैछे
४८कोसकोनगर तांबाकोकोटछै २४कोसकोबाजार सुवर्णमेदेहरा रत्ननीप्रतिमाछे
तिहांजैनधर्मछैतेमहो एकातक्रनीकुजाधीदसमुलतानमोबामातिजईआवा तेलोकहो
तेतिसबछैपहो तिहांथीआगेसमुदनजीकछै जाहांरथीमाठाबपनामे गाउजईइतिकारजै
नधर्मपामीई तेषहीकरीमानजो इतिसंपूर्ण

(C) शेठ अमरचंदजी की प्रति को पन्ने

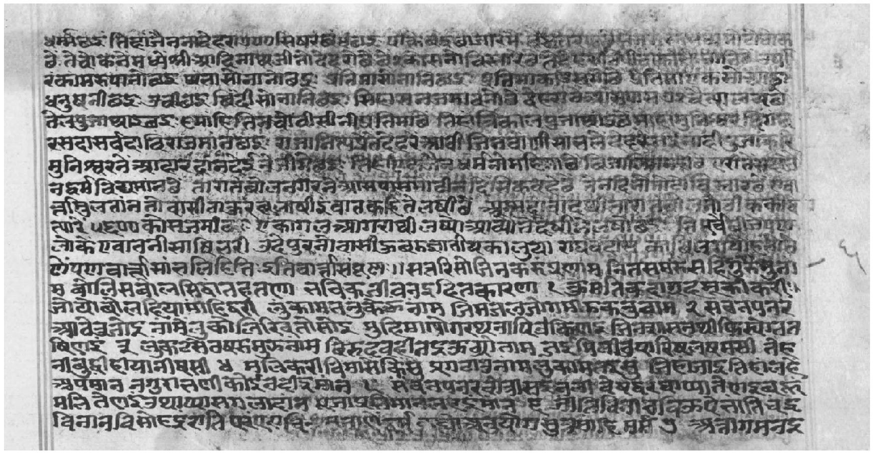

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

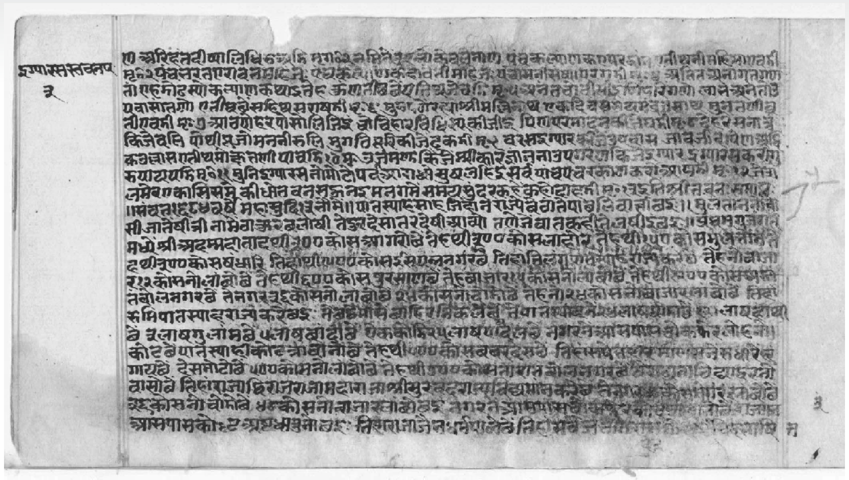

(D) निर्ग्रंथ यात्रा विवरण प्रति के पन्ने

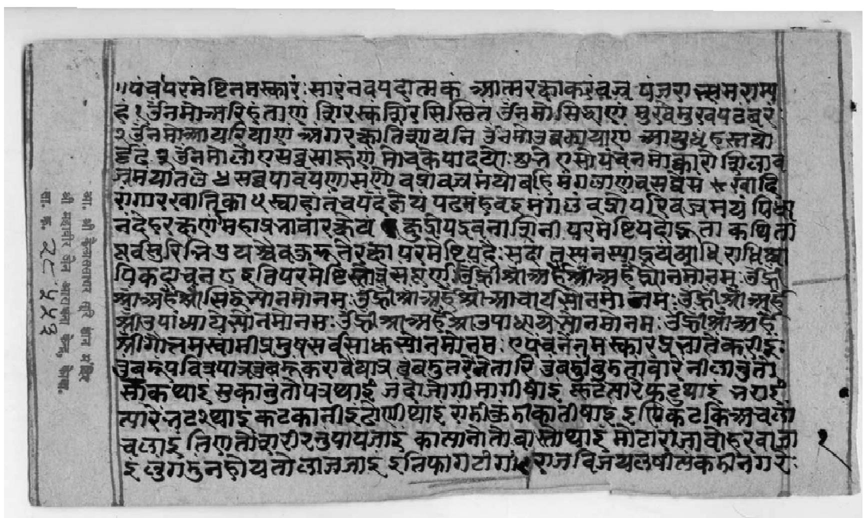

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 31

जैन नगर तारातंबोल

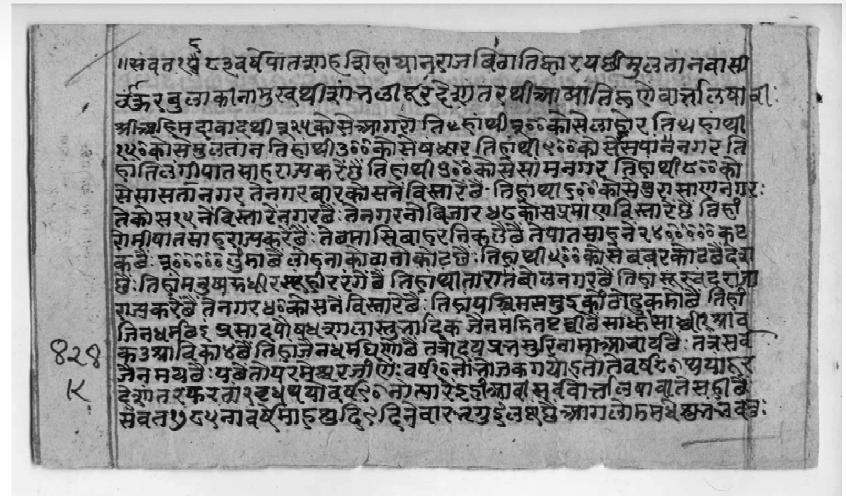

(E) अन्य हस्तप्रति के पन्ने

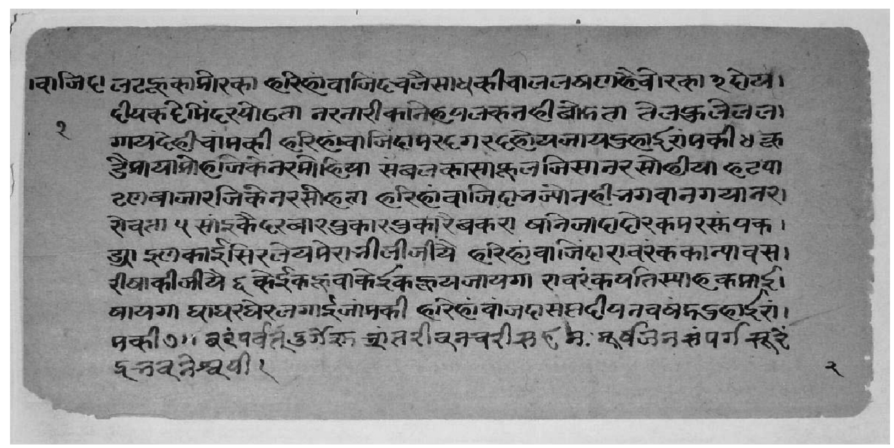

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

(E)

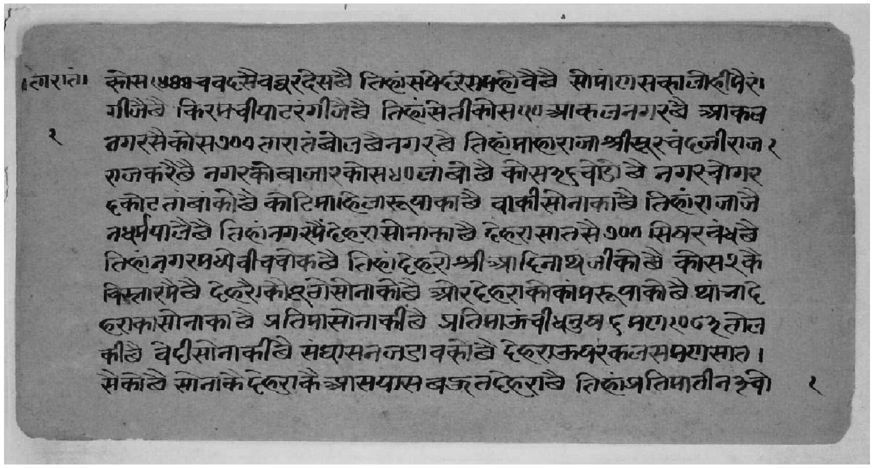

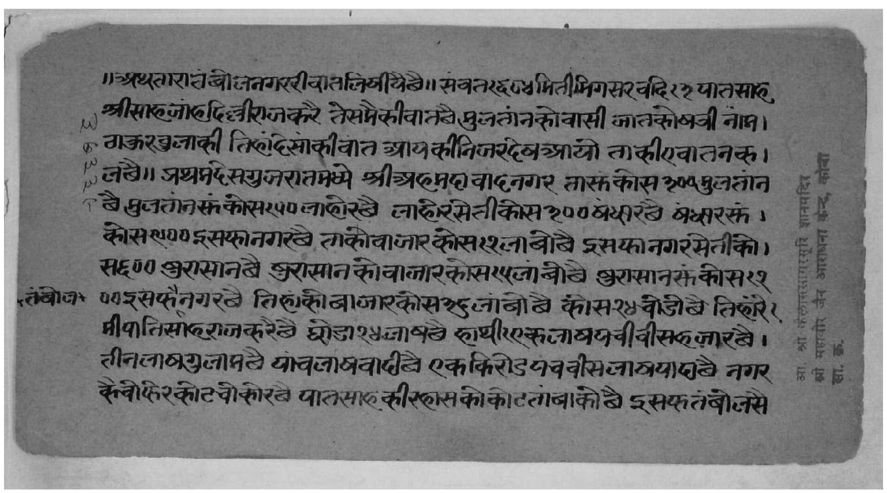

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 32

(E)

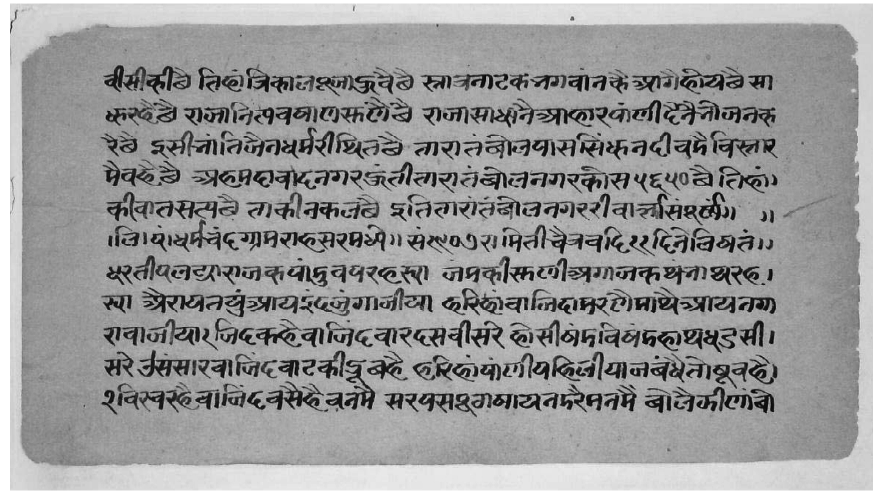

प्रत नं.३७३३१	प्रत नं.२८५५३	प्रत नं.११०	प्रत नं.२८२८२	जै.स.प्र. वर्ष-४ अंक-३	जै.स.प्र. वर्ष-६ अंक-६
गाम,शहेर-अंतर-कोस	गाम, शहेर-अंतर-कोस	अंतर-गाउ	गाम, शहेर-अंतर-कोस	गाम,शहेर-अंतर-कोस	गाम,शहेर-अंतर-कोस
गुजरात- श्रीअहमदावादथी	गुजरात-श्रीअहमदावादथी	लाहोरथी	गुजरात-श्रीअहमदावादथी	गुजरात-श्रीअहमदावादथी	
-	३२५-आगरा	-	३००-आगरा	३००-आगरा	३२५-आगरा
३००-मुलतान	३००-लाहोर	-	३००-लाहोर	३००-लाहोर	३००-लाहोर
१५०-लाहोरA	१५०-मुलतान	१५०-मुलतान	१५०-मुलतान	१५०-मुलतान	१५०-मुलतान
३००- खंधार	३००-खंधार	३००-खंधार	३००-खंधारि	३५०-बंदर*	३००-खंधार
१००-इसफानगर	१००-इसपानगर	१००-इसपत्र	१००-ईसपत्रनगर	१००-आसापुरी नगरी#	-
-	७००-सामनगर	७००-सामनगर	-	७००-तारातंबोल#	७००-सामनगर
-	८००-सासतानगर	८००-सताननगर	-	६००-तळाव	८००-सासतानगर
६००-खुरासान	६००-खुरासाणनगर	६००-खुरासाण	६००-खुरसाण	५००-तलंगपुर#	६००-खुरसानसेहर
१२००- इसफ तंबोलनगर	-	२००-ईसतंबोल	१२००-अस्तंतबोल	७००-नवापुरी पाटण#	
१४००-वब्बरदेश	५००-बबरकोट	५००-बबरकोट	५००-बबर देश	-	
५०-आकलनगर	? - तारातंबोल		७००-तारातंबोल	-	
७००-तारातंबोल	-	७००- तारातंबोल	-	३००बीजु तारातंबोल	१२००-तारातंबोल
-	-	-	-	अमदावादथी तारातंबोल-४८०० कोस.	

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

प.पू. पंजाब देशोद्धारक आ. विजयानंद सू. म. (आत्मारामजी म.) का सन्मार्गदर्शक साहित्य

1.	सम्यक्त्व शल्योद्धार	325/-
2.	नवयुग निर्माता	200/-
3.	जैन तत्त्वादर्श	300/-
4.	जैन धर्म विषयक प्रश्नोत्तर	200/-
5.	जैन मत वृक्ष और पद्य साहित्य	200/-
6.	जैन मत का स्वरूप	125/-
7.	नवतत्त्व संग्रह	300/-
8.	ईसाईमत समीक्षा	100/-
9.	चिकागो प्रश्नोत्तर	100/-
10.	अज्ञानतिमिर भास्कर	500/-
11.	तत्त्व निर्णय प्रसाद	500/-

प.पू. मुनिराज ज्ञानसुंदरजी म.सा. द्वारा लिखित साहित्य

1.	मूर्तिपूजा का प्राचीन इतिहास	100/-
2.	श्रीमान् लौंकाशाह	100/-
3.	हाँ ! मूर्तिपूजा शास्त्रोक्त है	30/-
4.	सिद्ध प्रतिमा मुक्तावली	100/-
5.	क्या जैन धर्म में प्रभु दर्शन - पूजन की मान्यता थी ?	50/-
6.	जैन जाति महोदय	400/-

पू. गुरुदेवमुनिराजश्री - भुवनविजयान्तेवासि - मु. श्री जंबूविजयजी म. संशोधित - संपादित ग्रंथो

1.	द्वादशारनयचक्र भाग-1	300/-
2.	द्वादशारनयचक्र भाग-2	300/-
3.	द्वादशारनयचक्र भाग-3	300/-
4.	आचारांगसूत्र मूलमात्र	300/-

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 33

5.	सूत्रकृतांगसूत्र मूलमात्र	300/-
6.	स्थानांग तथा समवायांगसूत्र मूलमात्र	300/-
7.	ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र मूलमात्र	300/-
8.	अनुयोगद्वार सूत्र चूर्णि, हारिभद्री वृत्ति तथा मलधारिहेमचन्द्रसूरिविरचितवृत्ति सहित भाग-1	300/-
9.	अनुयोगद्वार सूत्र चूर्णि, हारिभद्री वृत्ति तथा मलधारिहेमचन्द्रसूरिविरचितवृत्ति सहित भाग-2	300/-
10.	स्थानाङ्गसूत्र अभयदेवसूरिविरचितवृत्ति सहित भाग-1	300/-
11.	स्थानाङ्गसूत्र अभयदेवसूरिविरचितवृत्ति सहित भाग-2	300/-
12.	स्थानाङ्गसूत्र अभयदेवसूरिविरचितवृत्ति सहित भाग-3	300/-
13.	समवायाङ्गसूत्र अभयदेवसूरिविरचितवृत्ति सहित	300/-
14.	द्रव्यालंकार स्वोपज्ञटीकासहित	300/-
15.	न्यायप्रवेशक बौद्धाचार्य दिङ्नाग प्रणीत	300/-
16.	सर्वसिद्धान्त प्रदेशक	300/-
17.	योगशास्त्र स्वोपज्ञवृत्तिसहित भाग-1	300/-
18.	योगशास्त्र स्वोपज्ञवृत्तिसहित भाग-2	300/-
19.	योगशास्त्र स्वोपज्ञवृत्तिसहित भाग-3	300/-
20.	पाटणना जुदा - जुदा भंडारोना हस्तलिखित ग्रंथोनुं सूचिपत्र भाग-1	300/-
21.	पाटना जुदा - जुदा भंडारोना हस्तलिखित ग्रंथोनुं सूचिपत्र भाग-2	300/-
22.	पाटना जुदा - जुदा भंडारोना हस्तलिखित ग्रंथोनुं सूचिपत्र भाग-3	300/-
23.	पाटना जुदा - जुदा भंडारोना हस्तलिखित ग्रंथोनुं सूचिपत्र भाग-4	300/-
24.	जैसलमेरना भंडारनुं सूचिपत्र	300/-
25.	धर्मबिन्दु (कर्ता-हिरभद्रसूरि म.) मुनिचन्द्रसूरिविरचितटीकासहित	300/-
26.	सिद्धहेमचंद्रशब्दानुशासन-लघुवृत्ति (प्र. आवृत्ति)	300/-
27.	सिद्धहेमचंद्रशब्दानुशासन-लघुवृत्ति (प्र. आवृत्ति)	300/-
28.	सिद्धहेमचंद्रशब्दानुशासन रहस्यवृत्ति	300/-

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

29.	सिद्धहेमचंद्रशब्दानुशासन (मूलसूत्रो अकारादिक्रम युक्त)	300/-
30.	वैशेषिकसूत्र - चन्द्रानन्दविरचितवृत्तिसहित	300/-
31.	उपदेशमाला - हेयोपादेयाटीका सहित	300/-
32.	स्थानांगसूत्र सटीक भाग-1 (द्वितीय आवृत्ति)	300/-
33.	स्थानांगसूत्र सटीक भाग-2 (द्वितीय आवृत्ति)	300/-
34.	स्थानांगसूत्र सटीक भाग-3 (द्वितीय आवृत्ति)	300/-
35.	योगशास्त्र स्वोपज्ञवृत्तिसहित भाग-1 (द्वितीय आ.)	300/-
36.	योगशास्त्र स्वोपज्ञवृत्तिसहित भाग-2 (द्वितीय आ.)	300/-
37.	योगशास्त्र स्वोपज्ञवृत्तिसहित भाग-3 (द्वितीय आ.)	300/-
38.	ठाणांगसमवायांगसुत्तं च (शीलांकाचार्य कृत्त टीकोपेत)	300/-
39.	आचारांगसूत्रकृतांगसूत्र सटीक	300/-
40.	आचारांगसूत्र (शीलाचार्यकृतवृत्ति युक्त) प्रथम श्रुतस्कंधना प्रथम चार अध्ययन पर्यंत	300/-
41.	पंचसूत्र सटीक	300/-
42.	गहुली संग्रह	300/-
43.	सूरिमंत्रकल्पसमुच्चय भाग-1	300/-
44.	सूरिमंत्रकल्पसमुच्चय भाग-2	300/-
45.	स्त्रीनिर्वाणकेवलीभुक्ति प्रकरणे	300/-
46.	जैसलमेर केटलोग - मूळकर्ता सी.डी. दलाल	300/-
47.	श्री सिद्धभुवन प्राचीन स्तवन संग्रह	50/-
48.	गुरुवाणी (पूज्यश्रीना प्रवचनोनो संग्रह) भाग-1	50/-
49.	गुरुवाणी (पूज्यश्रीना प्रवचनोनो संग्रह) भाग-2	50/-
50.	गुरुवाणी (पूज्यश्रीना प्रवचनोनो संग्रह) भाग-3	50/-
51.	गुरुवाणी (पूज्यश्रीना प्रवचनोनो संग्रह) भाग-4	50/-
52.	गुरुवाणी (पूज्यश्रीना प्रवचनोनो संग्रह) भाग-5	50/-
53.	हिमालय नी पदयात्रा	50/-
54.	अंतरिक्ष पार्श्वनाथ तीर्थ का इतिहास	50/-
55.	नंदीसूत्र मलयगिरि विरचित वृत्ति सहित	300/-

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 34

56.	અંતરિક્ષ પાર્શ્વનાથ તીર્થનો ઈતિહાસ	50/-
57.	गुरुवाणी (हिन्दी) 1	50/-
58.	गुरुवाणी (हिन्दी) 2	50/-
59.	गुरुवाणी (हिन्दी) 3	50/-
60.	गुरुवाणी (हिन्दी) 4	50/-
61.	गुरुवाणी (हिन्दी) 5	50/-
62.	हिमालय की पदयात्रा (हिन्दी)	50/-
63.	नमस्कार स्वाध्याय (संस्कृत विभाग)	300/-
64.	नमस्कार स्वाध्याय (प्राकृत विभाग)	300/-
65.	अभिधर्मकोष कारिका	50/-
66.	हस्तलीखीत ग्रंथो की सूची - 1	-
67.	हस्तलीखीत ग्रंथो की सूची - 2	-
68.	हस्तलीखीत ग्रंथो की सूची - 3	-

भूषण शाह द्वारा लिखित-संपादित हिन्दी पुस्तक

1.	जैनागम सिद्ध मूर्तिपूजा	100/-
2.	● जैनत्व जागरण	200/-
3.	● जागे रे जैन संघ	30/-
4.	पाकिस्तान में जैन मंदिर	100/-
5.	पल्लीवाल जैन इतिहास	100/-
6.	दिगंबर संप्रदाय : एक अध्ययन	100/-
7.	श्री महाकालिका कल्प एवं प्राचीन तीर्थ पावागढ	100/-
8.	अकबर प्रतिबोधक कौन ?	50/-
9.	● इतिहास गवाह है ।	30/-
10.	तपागच्छ इतिहास	100/-
11.	● सांच को आंच नहीं	100/-
12.	आगम प्रश्नोत्तरी	20/-
13.	जगजयवंत जीरावाला	100/-
14.	द्रव्यपूजा एवं भावपूजा का समन्वय	50/-

Created by Simpo PDF Creator Pro (unregistered version)
http://www.simpopdf.com

15. प्रभुवीर की श्रमण परंपरा 20/-
16. इतिहास के आइने में आ. अभयदेवसूरिजी का गच्छ 100/-
17. जिनमंदिर एवं जिनबिंब की सार्थकता 100/-
18. जहाँ नमस्कार वहाँ चमत्कार 50/-
19. ● प्रतिमा पूजन रहस्य 300/-
20. जैनत्व जागरण भाग-2 200/-
21. जिनपूजा विधि एवं जिनभक्तों की गौरवगाथा 200/-
22. ● अनुपमंडल और हमारा संघ 100/-
23. अकबर प्रतिबोधक कौन ? भाग-2 200/-
24. इशुख्रीस्त पर जैन धर्म का प्रभाव 50/-
25. खरतरगच्छ सहस्त्राब्दी निर्णय 50/-
26. प्राचीन जैन स्मारको का रहस्य 250/-
27. जैन नगरी तारातंबोल : एक रहस्य 50/-
28. जंबू जिनालय शुद्धिकरण 100/-
29. प्राचीन भारत की यात्रा पद्धति 300/-
30. शंकाए सही, समाधान नहीं. 50/-

भूषण शाह द्वारा लिखित/संपादित गुजराती पुस्तक

1. મંત્ર સંસાર સારં 200/-
2. ● જંબૂ જિનાલય શુદ્ધિકરણ 30/-
3. ● જાગે રે જૈન સંઘ 20/-
4. ● ઘંટનાદ
5. ● શ્રુત રત્નાકર (પૂ. ગુરૂદેવ જંબૂવિજયજી મ.સા. નું જીવન ચરિત્ર)
6. જૈનશાસનના વિચારણીય પ્રશ્નો 50/-

भूषण शाह द्वारा लिखित अंग्रेजी पुस्तक

1. ● Lights 300/-
2. ● History of Jainism 300/-

File Name O:\samir\bhushanbhai Tara Tambol Nagri 35

अन्य साहित्य

1. नवयुग निर्माता (पुनः प्रकाशन) (पू.आ. वल्लभसूरि म.सा.) 200/-
2. मूर्तिपूजा (गुजराती-खुबचंदजी पंडित) 50/-
3. मूर्ति मंडन - आ. लब्धि सू.म. 100/-
4. हमारे गुरुदेव (पू. जंबूविजयजी म.सा. का जीवन) 30/-
5. सफलता का रहस्य - सा. नंदीयशाश्रीजी म.सा. 20/-
6. ધરતી પર સ્વર્ગ - સા. નંદીયશાશ્રીજી મ. 20/-
7. Heaven on Earth - SA Nandiyasha Shriji M.S. 20/-
8. कर्म विज्ञान 20/-
9. जडपूजा या गुणपूजा - एक स्पष्टीकरण (हजारीमलजी) 30/-
10. पुनर्जन्म - (सं.पू.आ. जितेन्द्रसूरिजी म.सा.) 30/-
11. क्या धर्ममें हिंसा दोषावह है ? 30/-
12. तत्त्व निश्चय (कुएँ की गुंजार पुस्तक की समीक्षा) -
13. बत्तीस आगमों से मूर्तिसिद्धि (आशिष तालेडा) 50/-
14. जैन ज्ञाति निर्णय 50/-
15. श्वेतांबर दीगंबर समन्वय 200/-